त्रैमासिक न्यूजलेटर

जनवरी–मार्च, 2024

पुनर्नवा

आशाओं के दीप.....हौसले का सूरज

नूतन वर्ष अभिनंदन...! 01 जनवरी, नए साल की पहली सुबह, माननीय अध्यक्ष के सान्निध्य में प्राधिकरण के नए कैलेंडर का विमोचन।

बिहार राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण

आपदा प्रबंधन विभाग, बिहार सरकार

बिहार सरकार

माननीय उपाध्यक्ष की कलम से

माननीय अध्यक्ष, बिहार राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण – सह–माननीय मुख्यमंत्री, बिहार श्री नीतीश कुमार जी बिहार में आनेवाली सभी प्रकार की आपदाओं के दुष्प्रभावों को कम करने की दिशा में अत्यन्त संवेदनशीलता के साथ सतत् प्रयत्नशील रहे हैं। हर संभावित प्राकृतिक या मानवजनित आपदाओं के प्रति सजगता, जागरूकता एवं तैयारी के लिए किए जा रहे सभी प्रयासों को उन्होंने हमेशा ही हार्दिक समर्थन दिया है। उनकी इसी सतत् चिंता को ही ध्यान में रख बिहार राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण राज्य में तालाबों, गड्ढों, नहरों, नदियों आदि जल स्रोतों में डूबने से होने वाली मौतों को रोकने तथा उसमें यथासंभव कमी लाने के लिए एक व्यापक कार्ययोजना पर काम कर रहा है। प्राधिकरण अपने फ्लैगशिप कार्यक्रम 'सुरक्षित तैराकी' को आगामी अप्रैल माह से युद्ध स्तर पर क्रियान्वित करने को संकल्पबद्ध है।

विश्व स्वास्थ्य संगठन के आंकड़ों के अनुसार दुनिया के 172 देशों में डूबने से होने वाली मृत्यु के मामले में भारत का 32वां स्थान है। भारत में करीब 93,000 लोग प्रति वर्ष डूबने से मर जाते हैं। पूरी दुनिया में डूब कर मरने वालों में 50 प्रतिशत से ज्यादा संख्या बच्चों (आयु सीमा 6 वर्ष से 18 वर्ष) की है। बिहार में, जहां जलाशयों, नदियों, गड्ढों आदि की संख्या बहुत अधिक हैं, यह प्रतिशत और भी अधिक होने की आशंका है। इसे ध्यान में रख बांग्लादेश की तर्ज पर बिहार में सुरक्षित तैराकी (Safe Swim) के नाम से बच्चों एवं किशोरों को तैराकी सिखाने का भी कार्यक्रम चलाया जा रहा है। इसके तहत राज्य स्तर पर मास्टर ट्रेनर्स का प्रशिक्षण एवं समुदाय स्तर पर बालक–बालिकाओं के प्रशिक्षण संचालित किए जा रहे हैं। इसके लिए विशेष प्रशिक्षण मॉड्यूल बनाया गया है। इसमें तैराकी एवं जीवन रक्षा कौशल के विकास हेतु व्यावहारिक प्रशिक्षण पर विशेष बल दिया गया है। इसके माध्यम से नदियों के किनारे अवस्थित गांवों के तैराकी जानने वाले युवक–युवतियों को गहन और उच्चत्तर स्तर का प्रशिक्षण दिया जा रहा है। प्रशिक्षण के उपरांत वे तैराकी कौशल विकास के साथ डूबतों को बचाने हेतु सहायता एवं बचाव के विभिन्न तरीकों के बारे में दक्ष हो रहे हैं। यही प्रशिक्षित मास्टर ट्रेनर्स प्रशासन के सहयोग से समुदाय के स्तर पर 6 से 18 वर्ष के बालक – बालिकाओं को तैराकी एवं जीवन रक्षा के विभिन्न आयामों में प्रशिक्षित करते हैं।

इस कार्यक्रम का लाभ धरातल पर भी नजर आने लगा है। प्राधिकरण की ओर से प्रशिक्षित कुशल तैराक डूबने की घटनाओं की रोकथाम करने एवं बहुमूल्य जिन्दगियों की रक्षा करने में मददगार सबित हुए हैं। विगत चार जनवरी, 2024 की सुबह मुंगेर में गंगा नदी में एक बड़ा हादसा होने से टल गया। कष्टहरणी घाट के करीब गंगा में निकले चट्टान से एक नाव टकराकर डूबने लगी। लोगों की चीख–पुकार सुन घाट पर मौजूद श्री सुप्रशांत, श्री सौरभ एवं श्री विशाल ने गंगा में अपनी नाव उतार दी। सभी को सकुशल किनारे तक पहुंचाया। प्राधिकरण के सुरक्षित तैराकी कार्यक्रम के 18वें बैच में मुंगेर जिले के इन तीनों युवाओं ने मास्टर ट्रेनर्स का प्रशिक्षण प्राप्त किया था। मीडिया से बातचीत में इन युवकों ने प्रशिक्षण के लिए प्राधिकरण का विशेष तौर पर आभार जताया। आने वाले समय में यह अभियान नजीर साबित होगा, इसमें कोई दो राय नहीं।

(डॉ. उदय कांत)

विषय सूची

पृ.सं.

1	संपादकीय	4
2	'नीतीश' सुरक्षा कवच आपदा प्रबंधन में नए युग का सूत्रपात	5
3	प्राधिकरण का कैलेंडर पहली बार डिजिटली भी उपलब्ध	8
4	एनडीएमए और बीएसडीएमए मिलकर करेंगे कार्य	9
5	सकल पर्यावरण उत्पाद बनाम सकल घरेलू उत्पाद	10
6	विश्व जल दिवस पर विशेष : पानी की एक्सपायरी डेट क्या है?	13
7	जलती धरती, बेहाल जीवन	14
8	जलवायु परिवर्तन : सर्दियों में प्रदूषण, बिहार के छोटे शहर नए हॉटस्पॉट बने	16
9	विश्व कविता दिवस पर विशेष : याद आती है माँ	18
10	जयंती (04 मार्च) पर विशेष, रेणु की कहानी : ठेस	19
11	रेडियो दिवस : सजन रेडियो बजईओ–बजईओ जरा..'	23
12	कमाल की पेरेंटिंग टिप्स : पढ़ाई से जी नहीं चुरा पाएंगे बच्चे	25
13	भारत के जेन–जी और मिलेनियल इतना तनाव में क्यों हैं?	26
14	आपदाओं से मुकाबले के लिए समुदाय का सशक्त होना जरूरी	29
15	गंगा में नौका डूबी, प्राधिकरण के प्रशिक्षित तैराकों ने बचाई जानें	32
16	आगे बढ़ने का सबसे बड़ा हथियार शिक्षा : अशोक चौधरी	33
17	सेहत : हर 10 में एक व्यक्ति कैंसर का रोगी	35
18	सीखी मूक–बधिरों के संवाद की भाषा	36
19	आपदाओं से लड़ने को खड़ी हो रही फौज	37
20	स्पोर्ट्स : बिहार में विकसित होगी खेल संस्कृति	38
21	फिल्म समीक्षा : लापता लेडीज	39
22	मैं और मेरा कर्मस्थल	41

अपने सुझाव हमें भेजें, सोशल मीडिया पर हमारी मौजूदगी यहां है :

www.facebook.com/bsdma । www.instagram.com/bsdmabihar । www.twitter.com/BsdmaBihar

संपादकीय

विकास ऐसा हो जो आफत से बचाए,
ऐसा न हो कि आफत बन जाए।

संरक्षक मंडल
डॉ. उदय कांत, भा.अभि.से. (से.नि.)
उपाध्यक्ष, बि.रा.आ.प्र. प्राधिकरण

पी.एन. राय, भा.पु.से. (से.नि.)
सदस्य, बि.रा.आ.प्र. प्राधिकरण

मनीष कुमार वर्मा, भा.प्र.से. (से.नि.)
सदस्य, बि.रा.आ.प्र. प्राधिकरण

कौशल किशोर मिश्र, से.नि. (एम.डी. एण्ड सी.ई.ओ., टाटा ए.आई.जी.)
सदस्य, बि.रा.आ.प्र. प्राधिकरण

मीनेंद्र कुमार, भा.प्र.से.
सचिव, बि.रा.आ.प्र. प्राधिकरण

सहायक संपादक : संदीप कमल

संपादक मंडल
वरीय सलाहकार : डा. बी.के. सहाय, अशोक कुमार शर्मा, डा. अनिल कुमार, डॉ. जीवन कुमार
आई.टी. : सुश्री सुम्बुल अफरोज, मनोज कुमार
ई–मेल : info@bsdma.org
वेबसाईट : www.bsdma.org

नोटः– पुनर्नवा में प्रकाशित आलेख लेखकों के व्यक्तिगत एवं अध्ययन स्वरूप विचार हैं। लेखक द्वारा व्यक्त विचारों के लिए बिहार राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण उत्तरदायी नहीं है।

आपदा नहीं हो भारी,
यदि पूरी हो तैयारी।

बिन पानी सब सून

सुधि पाठकों को सर्वप्रथम रंगों का त्योहार होली (26 मार्च, 2024) की ढेरों शुभकामनाएं। आपका जीवन हमेशा चटक सुर्ख रंगों से गुलजार रहे। प्राधिकरण परिवार तमाम बिहारवासियों के लिए यही दुआ करता है।....लेकिन यह तभी संभव है, जब धरती हमारी आबाद रहे। पर्यावरण की चिंता हम सभी एक सजग प्रहरी के रूप में करें। होली की तरह ही इसी मार्च महीने में 22 तारीख को विश्व जल दिवस भी मनाया जाता है। संभव है, हममें से बहुत लोग इससे वाकिफ भी न हों। लोगों के बीच जल का महत्व, आवश्यकता और संरक्षण के बारे में जागरूकता बढ़ाने के लिये 22 मार्च को **"विश्व जल दिवस"** मनाया जाता है। आखिर, ऐसी नौबत आई क्यों? पानी को हमने अब तक पानी की तरह बहाया है। अब रस्मी तौर पर बचाने की बात साल में एक दिन करेंगे, तो हालात और बुरे होते चले जाएंगे। अगली पीढ़ी हमें कोसेगी। दुनिया का 70 प्रतिशत हिस्सा पानी से घिरा है, लेकिन उसमें से पीने योग्य जल करीब तीन फीसदी ही है। 97 फीसदी पानी पीने लायक ही नहीं है। अब तीन फीसदी पानी पर पूरी दुनिया टिकी है। जल संसाधन मंत्रालय के आंकड़ों से पता चलता है कि भारत में एक वर्ष में उपयोग किए जाने वाले जल की शुद्ध मात्रा अनुमानित 1,121 बिलियन क्यूबिक मीटर है। जबकि वर्ष 2025 में पीने वाले पानी की मांग 1093 और 2050 तक बढ़कर 1447 बीसीएम तक पहुंच सकती है। संयुक्त राष्ट्र की एक रिपोर्ट के मुताबिक, भारत में पेयजल का संकट लगातार गहरा होता जा रहा है। कई राज्य हैं जो भूजल की कमी के चरम बिंदु को पार कर चुके हैं। बिहार भी इससे अछूता नहीं है। गंगा के तट पर बसे पटना का भूजल स्तर भी आश्चर्यजनक रूप से गिरा है। हमारे धर्मग्रंथों ने हमें बताया है, जीवन का आधार पांच तत्वों को माना गया है। पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और आकाश। जल के बिना जीवन की कल्पना नहीं की जा सकती। दुनिया की बड़ी–बड़ी सभ्यताएं नदियों के किनारे ही विकसित हुई हैं। पाटलिपुत्र समेत तमाम प्राचीन नगर नदियों के तट पर ही बसे। जल का महत्व इस बात से भी समझा जा सकता है। दैनिक जीवन के अलावा जल खेती–किसानी और औद्योगिक उत्पादन के लिए भी बेहद आवश्यक है। आज पूरी दुनिया जल–संकट के साये में खड़ी है। हम जितनी जल्दी चेत जाएंगे, उतना ही भला होगा।

'नीतीश' सुरक्षा कवच आपदा प्रबंधन में नए युग का सूत्रपात

– बिहार राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण ने आईआईटी, पटना के सहयोग से तैयार किया आपदाओं की पूर्व चेतावनी देने वाला सुरक्षा उपकरण, मुख्यमंत्री ने किया लांच

– किसान, मजदूर, अनपढ़, दिव्यांग, बच्चे, महिला, बुजुर्ग और किन्नर आदि को ध्यान में रखकर बनाया गया है पेंडेंट 'नीतीश"

– शरीर की गर्माहट से ही चार्ज होगा, इसे बिजली से चार्ज करने की आवश्यकता नहीं, सैटेलाइट और मौसम केंद्र से जुड़ा होगा यह पेंडेंट "नीतीश"

बिहार राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण के लिए 30 जनवरी, 2024 की तारीख अविस्मरणीय और सदा के लिए इतिहास के पन्नों में दर्ज हो गई। इस दिन बिहार के माननीय मुख्यमंत्री सह अध्यक्ष, बिहार राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण श्री नीतीश कुमार ने पटना के सरदार पटेल भवन स्थित आपदा प्रबंधन प्राधिकरण के कार्यालय में राज्य को जीवन सुरक्षा लॉकेट तथा बीएसडीआरएन के रूप में दो सौगातें दी। यह आपदा प्रबंधन के क्षेत्र मे नई क्रांति का सूत्रपात करेगा। राज्य में वज्रपात एवं अन्य प्राकृतिक आपदाओं को बिहार राज्य पर पड़ने वाले दुष्प्रभावों को लेकर बिहार के माननीय मुख्यमंत्री श्री नीतीश कुमार हमेशा से चिंतित रहे हैं। हाल फिलहाल में उनकी चिंता वज्रपात से होने वाली मृत्यु की बढ़ती संख्या को देखकर अधिक हुई है। उन्होंने बिहार राज्य आपदा प्राधिकरण के उपाध्यक्ष डा० उदय कांत को इससे निपटने के उपाय ढूंढने का निर्देश दिया था। वैसे तो अबतक आपदा प्रबंधन विभाग की ओर वज्रपात की पूर्व चेतावनी देने के लिए, 'इंद्रवज्र' नामक एप बनवाया गया जो मोबाईल पर वज्रपात के आसन्न खतरे की पूर्व सूचना दे सकता है। इसके साथ ही अति संवेदनशील चिह्नित गांवों में जल मीनारों व ऊंची इमारतों पर तेज ध्वनि विस्तारक यंत्र (हूटर) लगाकर लोगों को पूर्व चेतावनी देने का काम भी किया जा रहा था लेकिन इन तमाम प्रयत्नों के बावजूद वज्रपात से होने वाली मौतों की संख्या में

कोई खास कमी नहीं आई। इसकी एक मात्र वजह यह थी कि बसावट से दूर, खेतों में, प्रायः अर्द्धनग्न अवस्था में काम कर रहे, कृषि कर्मियों के पास न तो मोबाईल होता था न और ही हूटर की आवाज उनतक पहुंचती थी। इन सभी सीमाओं को ध्यान में रखते हुए आपदा प्रबंधन प्राधिकरण के उपाध्यक्ष डा. उदय कांत ने एक ऐसे छोटे से उपकरण की अवधारणा सामने रखी जिसे खेतिहर मजदूरों के शरीर से बांध कर रखा जा सके। उनकी इस सोच को प्राधिकरण के माननीय सदस्यों, क्रमशः श्री पारस नाथ राय, श्री मनीष कुमार वर्मा एवं श्री कौशल किशोर मिश्र का सक्रिय सहयोग प्राप्त हुआ।

अब इस परिकल्पना को मूर्त रूप देने की समस्या सामने आई। इसके लिए बहुत सोच–समझकर प्राधिकरण ने भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (आई.आई.टी.), पटना से हाथ मिलाया। प्रारंभिक कई कठिनाइयों के उपरांत आईआईटी, पटना के निदेशक, डॉ० त्रिलोक नाथ सिंह के दिशा–निदेश में आई.आई.टी., पटना के कम्प्यूटर साइंस विभागाध्यक्ष प्रो० राजीव मिश्रा, डॉ० अरजीत रॉय एवं श्री आकाश ने गहन अन्वेषण के उपरांत एक नीत, तीव्र, एवं शक्तिशाली, सुरक्षा कवच पेंडेंट का निर्माण कर लिया। जिसका नाम अनायास ही 'नीतीश' पेंडेंट हो गया है। सामान्य कलाई घड़ी के जैसा ही 47 मिमी x 48 मिमी x 16 मिमी एवं मात्र 43 ग्राम वाले इस पेंडेंट, लॉकेट या ताबीज की शक्ल वाले इस इलेक्ट्रॉनिक डिवाइस का अंग्रेजी नाम भी है– NITISH - Novel & Intense Technological Intervention for Safety of Human lives. इसे आसानी से गले में लटकाया या बांह पर बांधा जा सकता है। प्राधिकरण के उपाध्यक्ष डॉ उदय कान्त बताते हैं कि नीतीश पेंडेंट की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि यह शरीर की ऊर्जा और गर्माहट से ही रिचार्ज होता रहता है। क्षेत्र विशेष में वज्रपात या किसी अन्य आपदा की पूर्व चेतावनी जैसे ही आएगी, नीतीश पेंडेंट अपने स्वामी को तीन प्रकार से सतर्क कर देगा। इससे वॉयस मैसेज सुनाई पड़ेगी। यह वाईब्रेट भी करेगा तथा इसका रंग हरे से लाल में तब्दील हो जाएगा। जब तक इसे पहनने वाला इसका स्वीच ऑफ न कर दे तब तक नीतीश पेंडेंट चेतावनी देता ही रहेगा। स्वीच ऑफ करते ही प्राधिकरण के कम्प्यूटर में यह सूचना स्वतः ही आ जाएगी कि व्यक्ति विशेष तक चेतावनी पहुँच चुकी है। नीतीश पेंडेंट वाटरप्रूफ भी है जिसे समाज के प्रत्येक तबके को ध्यान में रखकर बनाया गया है।

नीतीश पेंडेंट इलेक्ट्रॉनिक डिवाइस 100 फीसद सुरक्षित है। बिहार मौसम सेवा केन्द्र के सहयोग से नीतीश पेंडेंट वज्रपात ही नहीं, बाढ़, अत्यधिक गर्मी यानी लू और शीतलहरी जैसी अनेक आपदाओं से पहले, ससमय पूर्व चेतावनी दे सकेगा। आईआईटी, पटना एवं बिहार राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण के बीच हुए एमओयू के तहत सम्प्रति आईआईटी पटना, अपनी ही प्रयोगशाला में ऐसे 1 लाख पेंडेंट बनाएगा। आईआईटी, पटना के प्रोफेसर डा. राजीव मिश्रा ने बताया है कि शीघ्र ही नीतीश पेंडेंट का पेटेंट प्राधिकरण एवं आईआईटी, पटना के संयुक्त नाम से कराया जाएगा। डॉ० राजीव ने यह भी कहा है कि अभी नीतीश पेंडेंट में लगाये जाने

वाले पुर्जों में एक का आयात करना पड़ रहा है। इस कारण नीतीश पेंडेंट की लागत करीब 1000 रुपए से थोड़ी कम आ रही है। प्रयास यह है कि आयातित पुर्जे को आई. आई. टी., पटना में ही डिजाइन कर लिया जाए। ऐसा होने से नीतीश पेडेंट की कीमत में तकरीबन 20 प्रतिशत कमी आने की संभावना है।

प्राधिकरण में कार्यरत श्री रवीन्द्र भारती तथा मुख्यमंत्री कार्यालय में सेवारत कई कर्मियों ने बताया कि माननीय मुख्यमंत्री श्री नीतीश कुमार जी, इस प्रयोग की सफलता के लिए सतत् चिंतित रहते हुए भी, प्राधिकरण का लगातार उत्साहवर्द्धन करते रहे क्योंकि उन्हें प्राधिकरण की क्षमता पर अदम्य विश्वास था। इसलिए 31 जनवरी की अपराह्न में जब वे इस पेंडेंट से रू–ब–रू हुए, उनकी तथा उनके सभी सहयोगियों की प्रसन्नता देखते ही बनती थी। जब उन्हें इस पेंडेंट का नाम बताया गया तो वे काफी संकोच में पड़ गए क्योंकि उन्होंने अब तक जनहित के सारे कार्य बिना किसी प्रतिदान अथवा श्रेय की अपेक्षा में किए थे। किन्तु इसके नाम की घोषणा होते ही बीएसडीएमए का सभागार तालियों से गूंज उठा था। माननीय मुख्यमंत्री श्री नीतीश कुमार के सम्मुख इस स्वतःस्फूर्त सर्वसम्मति से दी गई स्वीकृति को स्वीकारने के अतिरिक्त कोई उपाय भी शेष नहीं बचा था।

नीतीश की प्रेरणा: आपदा में पेंडेंट 'नीतीश' व बीएसडीआरएन बनेगा सुरक्षा कवच

आईआईटी, पटना द्वारा तैयार यह इलेक्ट्रॉनिक डिवाइस 31 जनवरी को प्रदेशवासियों के लिए बना वरदान

पटना (एसएनबी)। मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने आपदा प्रबंधन के लिए राज्य को जीवन सुरक्षा लॉकिट तथा बीएसडीआरएन के रूप में दो सौगाते दीं। वज्रपात से होने वाली मृत्यु की बढ़ती संख्या के आलोक में उन्होंने बिहार राज्य आपदा प्राधिकरण के उपाध्यक्ष, डॉ. उदय कांत को इससे निपटने के उपाय ढुंढने का निर्देश दिया था। वैसे तो विभाग द्वारा पूर्व वज्रपात की पूर्व चेतावनी देने के लिए 'इंद्रवज्र' नामक एप बनवाया गया जो मोबाइल पर आसन्न खतरे की पूर्व सूचना प्रदान करता है। अति संवेदनशील चिह्नित गांवों में जल मीनारों व ऊंची इमारतों पर तेज ध्वनि विस्तारक यंत्र (हूटर) लगाकर लोगों को पूर्व चेतावनी देने का काम किया जा रहा था। तमाम प्रयत्नों के बावजूद वज्रपात से होने वाली मौतों की संख्या में कोई खास कमी नहीं आई। इसका एक मात्र वजह यह था कि बसावट से दूर खेतों में प्रायः अर्धनग्न अवस्था में काम कर रहे कृषि कर्मियों के पास न तो मोबाइल होता था न तो हूटर की आवाज उनतक पहुंच पाती थी। इन सभी सीमाओं को ध्यान में रखते हुए आपदा प्रबंधन प्राधिकरण के उपाध्यक्ष ने एक ऐसे छोटे से उपकरण की अवधारणा सामने रखी जिसे खेतिहर मजदूरों के शरीर से बांध कर रखा जा सके। इस सोच को प्राधिकरण के सदस्यों क्रमशः पारस नाथ राय, मनीष कुमार वर्मा एवं कौशल किशोर मिश्र का सक्रिय सहयोग मिला। अब इस परिकल्पना को मूर्त रूप देने के लिए प्राधिकरण ने आईआईटी, पटना से हाथ मिलाया। आईआईटी, पटना के निदेशक डॉ. त्रिलोक नाथ सिंह के दिशा-निर्देश में आईआईटी के सीएस विभागाध्यक्ष प्रो. राजीव मिश्रा, डॉ. अरजीत रॉय एवं श्री आकाश ने गहन अन्वेषण के बाद एक तीव्र एवं शक्तिशाली सुरक्षा कवच 'नीतीश' पेंडेंट का निर्माण कर लिया। जिसका नाम अनायास ही नीतीश ही हो गया है। सामान्य कलाई घड़ी के जैसा ही 47 मिमी., 48 मिमी. 16 मिमी. एवं मात्र 43 ग्राम से हल्के वजन वाले इस (लॉकिट या ताबिज की शक्ल) इलेक्ट्रानिक डिवाइस (पेंडेंट) को आसानी से गले में लटकाया या बांह पर बांधा जा सकता है। उपाध्यक्ष डॉ. उदय कान्त बताते हैं कि इसकी सबसे बड़ी विशेषता यह है कि यह शरीर की ऊर्जा और गर्माहट से ही रिचार्ज होता रहता है। क्षेत्र विशेष में वज्रपात या किसी अन्य आपदा की पूर्व चेतावनी जैसे ही आएगी अपने स्वामी को तीन प्रकार से सतर्क कर देगा। इससे वॉयस मैसेज सुनाई पड़ेगी। यह वाइब्रेट भी करेगा तथा इसका रंग हरे से लाल में तब्दील हो जाएगा। जब तक इसे पहनने वाला इसका स्वीच ऑफ न कर दे यह चेतावनी देता रहेगा। यह वाटरप्रूफ भी है जिसे किसान, मजदूर, अनपढ़, दिव्यांग, बच्चे, महिला, बुजुर्ग किन्नर आदि अर्थात समाज के प्रत्येक तबके को ध्यान में रखकर बनाया गया है। 'नीतीश' पेंडेंट इलेक्ट्रॉनिक डिवाइस 100 फीसद सुरक्षित है। बिहार मौसम सेवा केन्द्र के सहयोग से वज्रपात ही नहीं, बाढ़, लू और शीतलहरी जैसी आपदाओं से पहले, ससमय, यह पूर्व चेतावनी दे सकेगा। आईआईटी एवं बिहार राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण के बीच हुए एमओयू के तहत आईआईटी, पटना अपने ही लैब में अभी ऐसे 1 लाख पीस बनाएगा। आईआईटी प्रोफेसर डॉ. राजीव मिश्रा ने बताया है कि शीघ्र ही नीतीश पेंडेंट का पेटेंट प्राधिकरण एवं आईआईटी के संयुक्त नाम से कराया जाएगा। अभी इसके पुर्जों को आयातित करना पड़ रहा है इस कारण इसकी लागत करीब 1000 रुपए से थोड़ी कम आ रही है। सरकार का प्रयास यह है कि इसे आईआईटी में ही डिजाइन कर लिया जाए। ऐसा होने से कीमत में तकरीबन 20 प्रतिशत कमी आने की संभावना है। 31 जनवरी को मुख्यमंत्री पेंडेंट से रू-ब-रू हुए। उन्हें इस पेंडेंट का जब नाम बताया गया तो वे काफी संकोच में पड़ गए क्योंकि उन्होंने अब तक सारे कार्य बिना किसी प्रतिदान अथवा श्रेय की अपेक्षा में किए थे। मुख्यमंत्री के सम्मुख इसे सर्वसम्मति से स्वीकृति दे दी गई।

- किसान, मजदूर, अनपढ़, दिव्यांग, बच्चे, महिला, बुजुर्ग किन्नरों आदि को ध्यान में रखकर बनाया गया है 'नीतीश'
- यह सुरक्षा कवच दरअसल नीत, तीव्र एवं शक्तिशाली पेंडेंट है जो इसकी तीनों खूबियों का छोटा नाम है 'नीतीश'
- शरीर की गर्माहट से ही चार्ज होगा 'नीतीश, इसे बिजली से चार्ज करने की आवश्यकता नहीं
- सैटेलाइट और मौसम केंद्र से जुड़ा होगा यह पेंडेंट

आपदा की घड़ी में जान बचाने में बीएसडीआरएन एप मददगार

बिहार स्टेट डिजास्टर रिसोर्स नेटवर्क (बीएसडीआरएन) एप भी आपदा के दौरान घटनास्थल के आसपास उपलब्ध संसाधनों को चिह्नित करेगा। प्राधिकरण के उपाध्यक्ष डॉ. उदय कान्त ने बताया कि बिहार राज्य आपदा संसाधन नेटवर्क के प्रणेता नीतीश कुमार (मुख्यमंत्री सह अध्यक्ष) के निर्देश पर इसकी मूल परिकल्पना व्यास जी, पारसनाथ राय एवं प्रत्यय अमृत की थी। इस महत्वपूर्ण कार्य को जमीन पर लाने के लिए प्राधिकरण के सदस्य मनीष कुमार वर्मा, कौशल किशोर मिश्रा की सहभागिता ने इसे अंजाम तक पहुंचाया। श्री विभू कुमार, दिलीप कुमार, सम्बुल अफरोज, कुंदन कुमार कौशल का सहयोग रहा।

- बीएसडीआरएन का ऐप गूगल प्लेस्टोर से उपलब्ध

इस तरह बढ़ा कारवां

- राष्ट्रीय स्तर पर संसाधनों की सूची की कमी
- 2016 बाढ़ विभीषिका के दौरान मुख्यमंत्री ने राज्य के संसाधनों के समुचित एवं ससमय उपयोग का कार्य प्राधिकरण को 2017 में सौंपा।
- 2018-19 तत्परता से काम करने के उपरांत भी कई संसाधन को सूचीबद्ध नहीं किया जा सका।
- मुख्य कारण-संसाधनों के बारे में विश्वसनीय आंकड़े उपलब्ध नहीं थे।
- 2020-21में कोविड के दौरान प्राधिकरण में इस मामले पर गंभीरता से विमर्श हुआ तथा संसाधनों की उपलब्धता को तुरंत जानने के लिए आधुनिक तकनीक का सहारा लिया गया।
- आज किसी भी आपदा में इस एप का सिर्फ एक बटन को दबाकर घटना के आसपास उपलब्ध सभी संसाधनों की जानकारी आसानी से ली जा सकती है एवं उनसे संपर्क किया जा सकता है।
- आपदा की घड़ी में बीएसडीआरएन पर उपलब्ध संसाधन, सामग्री इत्यादि मोबाइल फोन के माध्यम से प्राप्त कर पाना अब आसान हो गया है। विभिन्न आपदाओं में त्वरित कार्रवाई हेतु बचाव एवं राहत में यह एप बहुत ही उपयोगी होगा। बीएसडीआरएन का एप गूगल प्लेस्टोर से डाउनलोड किया जा सकता है। इसमें राज्य के सभी 38 जिलों से कुल छह श्रेणियों में अब तक करीब 65 हजार डाटा संग्रहित किया जा चुका है। इसे निरंतर अपडेट किया जाता है।

लॉकेट 'नीतीश' का कराया जाएगा पेटेंट

पटना, हिन्दुस्तान ब्यूरो। वज्रपात जैसी आपदा से बिहारवासियों को बचाने के लिए विकसित जीवन सुरक्षा लॉकिट नीतीश का पेटेंट कराया जाएगा। जल्द ही इसके लिए आवेदन किए जाएंगे। इसकी जानकारी आईआईटी पटना कंप्यूटर साइंस विभागाध्यक्ष प्रो. राजीव मिश्रा ने दी।

उन्होंने बताया कि नीतीश पेंडेंट (लॉकिट) का पेटेंट प्राधिकरण एवं आईआईटी पटना के संयुक्त नाम से कराया जाएगा। आईआईटी पटना अपनी प्रयोगशाला में इस उपकरण के एक लाख पीस बनाएगा। पहले चरण में प्राधिकरण की ओर से दस हजार लॉकिट (पेंडेंट) का आर्डर प्राधिकरण की तरफ से आया है। इसके लिए प्राधिकरण और आईआईटी के बीच एमओयू हो चुका है।

01 हजार रुपए आ रही है अभी लॉकेट की कीमत

- पहले चरण में एक लाख पीस बनाए जाएंगे

पेंडेंट कैसे करेगा काम

प्राधिकरण के उपाध्यक्ष डॉ. उदय कान्त बताते हैं कि नीतीश पेंडेंट की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि यह शरीर की ऊर्जा और गर्माहट से ही रिचार्ज होता रहता है। लोग गले में पहनेंगे। यह वाटरप्रूफ है। किसान, मजदूर, अनपढ़, दिव्यांग, बच्चे, महिला, बुजुर्ग आदि को ध्यान में रखकर बनाया गया है। वज्रपात की चेतावनी के समय इससे वॉयस मैसेज सुनाई देगा। यह वाइब्रेट भी करेगा। इसका रंग हरे से लाल हो जाएगा। स्वीच ऑफ होने तक यह बजता रहेगा।

सौ फीसदी सुरक्षित व शक्तिशाली है लॉकेट

उन्होंने दावा कि नतीत तीव्र शक्तिशाली (नीतीश) लॉकिट इलेक्ट्रॉनिक डिवाइस 100 फीसदी सुरक्षित है। इसका अंग्रेजी नाम है – नॉवेल एंड इनोवेटिव टेक्नोलॉजिकल इंटरवेनशन फॉर सेफ्टी ऑफ ह्यूमन लाइव्स। बिहार मौसम सेवा केन्द्र के सहयोग से नीतीश पेंडेंट वज्रपात ही नहीं, बाढ़, अत्यधिक गर्मी यानी लू और शीतलहरी जैसी अनेक आपदाओं से पहले, ससमय, पूर्व चेतावनी दे सकेगा।

उन्होंने कहा कि अभी नीतीश पेंडेंट में लगाये जाने पुर्जों में एक को आयातित करना पड़ रहा है। इस कारण पेंडेंट की लागत करीब 1000 रुपये आ रही है। प्रयास यह है कि आयातित पुर्जे को आईआईटी पटना में ही डिजाइन कर लिया जाए।

ऐसा होने से लॉकिट की कीमत 20 फीसदी कम हो जाएगी। प्रो. राजीव मिश्रा, डॉ. अरजीत राय और आकाश की टीम ने नीत, तीव्र, एवं शक्तिशाली सुरक्षा कवच का निर्माण किया। इसी का पेटेंट कराया जाएगा। इसका आकार 47 मिमी गुणा 48 मिमी गुणा 16 मिमी है। वजन सिर्फ 43 ग्राम है।

'नीतीश' सुरक्षा कवच की लांचिंग से जुड़ी खबरों को देश भर के प्रायः **सभी अखबारों और कई वेबसाइट**स ने प्रमुखता से प्रकाशित किया। सोशल मीडिया पर यह खबर ट्रेंड करती रही।

प्राधिकरण का कैलेंडर पहली बार डिजिटली भी उपलब्ध

माननीय मुख्यमंत्री, बिहार–सह माननीय अध्यक्ष, बिहार राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण श्री नीतीश कुमार ने 01 जनवरी को पटना के 1, अणे मार्ग स्थित संकल्प सभाकक्ष में प्राधिकरण के आपदा जोखिम न्यूनीकरण कैलेंडर–2024 का विमोचन किया। इस मौके पर प्राधिकरण के माननीय उपाध्यक्ष डॉ. उदय कांत, माननीय सदस्य श्री पी.एन. राय, माननीय सदस्य श्री मनीष कुमार वर्मा, माननीय सदस्य श्री कौशल किशोर मिश्र, प्राधिकरण के सचिव श्री मीनेंद्र कुमार (भा.प्र.से.) और सहायक संपादक श्री संदीप कमल भी मौजूद थे।

कैलेंडर का प्रकाशन विभिन्न आपदाओं से बचाव के लिए प्राधिकरण के जन जागरूकता अभियान का अहम हिस्सा है। मुख्यमंत्री महोदय ने छपी सामग्रियों का गंभीरता से अवलोकन किया। माननीय उपाध्यक्ष व माननीय सदस्यों ने कैलेंडर के विषय वस्तु के बारे में माननीय मुख्यमंत्री को अवगत कराया। इस बार के कैलेंडर की खासियत यह है कि राज्य के जाने–माने कार्टूनिस्ट पवन कुमार ने रेखा चित्रों के माध्यम से आपदाओं में सुरक्षित रहने की जानकारी देने का प्रयास किया है। आसान और सहज भाषा में आपदाओं से बचाव के तरीके बताए गए हैं। इसमें मुख्यमंत्री विद्यालय सुरक्षा कार्यक्रम 'सुरक्षित शनिवार' की पूरी जानकारी दी गई है। साथ ही कोरोना से बचाव के लिए स्कूलों में संचालित किए जानेवाले 'सुरक्षित गुरुवार' की भी पूरे वर्ष भर की गतिविधियों के बारे में बताया गया है।

इस वर्ष के दोनों ही कैलेंडर (वॉल व टेबल) में पहली बार क्यूआर कोड का इस्तेमाल किया गया है। इसे स्कैन करने के साथ ही डिजिटली पूरे कैलेंडर को देखा जा सकता है। साथ ही इसकी पीडीएफ भी डाउनलोड की जा सकती है। इस क्यूआर कोड को ज्यादा से ज्यादा शेयर करने से आपदाओं से बचाव का संदेश अधिकतम जनमानस तक पहुंचाया जा सकेगा।

एनडीएमए और बीएसडीएमए मिलकर करेंगे कार्य

–एनडीएमए के सदस्य श्री कृष्णा एस. वत्स ने प्राधिकरण के कार्यों को सराहा

राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन प्राधिकरण (एनडीएमए) के सदस्य श्री कृष्णा एस. वत्स ने शुक्रवार को यहां सरदार पटेल भवन स्थित बिहार राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण (बीएसडीएमए) का दौरा किया और प्राधिकरण की गतिविधियों से रू–ब–रू हुए। प्राधिकरण की ओर से अतिथि का स्वागत वक्तव्य माननीय सदस्य श्री पी.एन.राय ने किया। उन्होंने आपदा प्रबंधन के क्षेत्र में श्री वत्स के विशाल अनुभवों का जिक्र करते हुए बिहार में आपदा प्रबंधन के लिए बेहतर समन्वय की बात कही। आपदा जोखिम न्यूनीकरण और प्रबंधन के क्षेत्र में बिहार राज्य आपदा प्राधिकरण द्वारा चलाए जा रहे कार्यक्रमों की जानकारी देते हुए माननीय सदस्य श्री मनीष कुमार वर्मा ने सुरक्षित तैराकी कार्यक्रम, राजमिस्त्री प्रशिक्षण कार्यक्रम, मुख्यमंत्री स्कूल सुरक्षा के अंतर्गत सुरक्षित शनिवार कार्यक्रम, सामुदायिक स्वयंसेवक प्रशिक्षण कार्यक्रम, सड़क सुरक्षा कार्यक्रम, दिव्यांग समायोजित आपदा जोखिम न्यूनीकरण कार्यक्रम आदि के बारे में विस्तृत जानकारी प्रदान की।

उन्होंने जलवायु परिवर्तन के कारण मौसम में होनेवाले बदलाव तथा आपदा प्रबंधन के सापेक्ष नवीन नीतियों के निर्धारण और कार्यान्वयन पर विचार रखें। माननीय उपाध्यक्ष डॉ उदय कांत ने प्राधिकरण द्वारा किए जा रहे नवाचार के प्रयोगों यथा एआर, वीआर तकनीक के साथ, मशीन लर्निंग व आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के जरिए आपदा प्रबंधन के लिए किए जा रहे कार्यों को देश स्तर पर लागू करने का सुझाव दिया। एनडीएमए और बीएसडीएमए एक साथ किस तरीके से समन्वित रूप से कार्य करें, उस सापेक्ष में सदस्य श्री वत्स ने अपने विचार व्यक्त किए। आपदा के समय त्वरित संचार संवहन के लिए मानव संसाधन नेटवर्क तैयार कर बीएसडीआरएन ऐप के निर्माण, उद्देश्य और कार्यप्रणाली के बारे में विस्तृत जानकारी सुम्बुल अफरोज ने दी। कार्यक्रम में आईआईटी, पटना के कंप्यूटर साइंस विभाग के अध्यक्ष प्रोफेसर राजीव मिश्रा ने विभिन्न आपदाओं की पूर्व सूचना देने के लिए विकसित 'नीतीश' सुरक्षा कवच के बारे में जानकारी प्रदान की। इस कार्यक्रम में माननीय सदस्य श्री पी. एन. राय, माननीय सदस्य श्री कौशल किशोर मिश्र और सचिव श्री मीनेंद्र कुमार (भा.प्र.से.) भी उपस्थित रहे। धन्यवाद ज्ञापन प्राधिकरण के वरीय सलाहकार डॉ. अनिल कुमार ने किया।

सकल पर्यावरण उत्पाद बनाम सकल घरेलू उत्पाद

सकल पर्यावरण उत्पाद (जीईपी) का कैसा होगा निर्धारण, कैसे नपेगी जल–जंगल–जमीन? जीईपी का मूल्यांकन करने को पहली बार बनाया गया सूचकांक

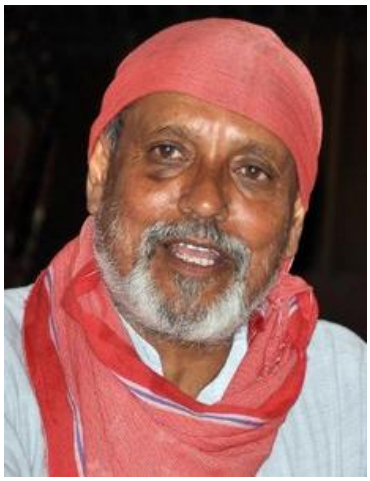

- **डा. अनिल प्रकाश जोशी व अन्य**

गर्म होती दुनिया में हम किस तरह विकास कर रहे हैं इसके पुनर्मूल्यांकन को अब बल मिलने लगा है। विकास का पारंपरिक संकेत मसलन सकल घरेलू उत्पाद (Gross Domestic Product यानी जीडीपी), उत्पादन और वृद्धि को मापता है। लेकिन, जीडीपी यह पता लगाने में विफल है कि मनुष्यों की गतिविधियों का पर्यावरण की गुणवत्ता और समाज की सलामती पर क्या असर पड़ता है? ऐसे में जरूरत है, एक ऐसी अवधारणा की, जो पर्यावरण पर होने वाले असर, सामाजिक असमानताएं, निरंतरता का असर और मानव द्वारा संसाधनों के इस्तेमाल के नकारात्मक प्रभाव को माप सके, क्योंकि संयुक्त राष्ट्र के सतत विकास लक्ष्यों के लिए ये बेहद अहम हैं।

इन नुकसानों का हल निकालने और विकास के साथ–साथ पर्यावरण की बेहतरी को नापने के लिए साल 2021 में उत्तराखंड सरकार ने सकल पर्यावरण उत्पाद (Gross Environmental Product यानी जीईपी) शुरू करने की घोषणा की। यह घोषणा करने वाला उत्तराखंड देश का पहला राज्य था। इस कदम का लक्ष्य प्राकृतिक संसाधनों की वृद्धि और स्वास्थ्य का मूल्यांकन करना एवं यह पता लगाना है कि मानवीय गतिविधियों का इन पर क्या सकारात्मक या नकारात्मक असर पड़ता है। सकल पर्यावरण उत्पाद सूचकांक का नियमन भी तैयार कर लिया गया है। अवधारणा के तौर पर सकल पर्यावरण उत्पाद की शुरुआत सबसे पहले 2011 में हिमालयन एनवायरमेंट स्टडीज एंड कंजर्वेशन ऑर्गनाइजेशन (एचईएससीओ) ने उत्तराखंड के देहरादून में की थी। इसके तहत संगठन चार चीजों वन, पानी, हवा और मिट्टी को मापता है। इकोलॉजिकल इंडिकेटर्स नाम के जर्नल में पिछले साल दिसंबर में छपा एक अध्ययन कहता है, "इनमें सुधार के लिए वैश्विक स्तर पर लगातार काम किया जा रहा है, लेकिन इन प्रयासों के प्रभावों का पता लगाने के लिए एक एकीकृत प्रणाली की कमी रही है। सकल पर्यावरण उत्पाद इसी खालीपन को भरने का प्रयास है।" (एचईएससीओ के अनिल प्रकाश जोशी ने इस अध्ययन का नेतृत्व किया है और इस लेख के लेखकों में वह भी शामिल हैं।)

सकल पर्यावरण उत्पाद सूचकांक का हर घटक एक खास पहलू को उजागर करता है। वन–सकल पर्यावरण उत्पाद सूचकांक वन संसाधनों की स्थिति और मृदा–सकल पर्यावरण उत्पाद सूचकांक मिट्टी की सेहत का मूल्यांकन करता है। वहीं, वायु–सकल पर्यावरण उत्पाद सूचकांक वायु गुणवत्ता में सुधार पर फोकस करता है और जल–सकल पर्यावरण उत्पाद सूचकांक पानी की गुणवत्ता और इसकी मौजूदगी का मूल्यांकन करता है।

वनों की स्थिति

वन–सकल पर्यावरण उत्पाद सूचकांक पारंपरिक तौर पर टिंबर के उत्पादन से इतर वनों के पारिस्थितिक महत्वों की तरफ देखता है। इसका लक्ष्य पारिस्थितिक गतिविधियों में भूमिका निभाने वाले जलवायु–प्रतिरोधी पेड़ों के जरिए वनाच्छादित क्षेत्र बढ़ाने के मानव प्रयासों को आंकड़ों के रूप में देखना है। शोधकर्ताओं ने सूचकांक के लिए चार मापदंड तय किए हैं, कितने पेड़ लगाए गए (यह वनीकरण और पारिस्थितिकी तंत्र की बहाली का संकेत देता है), कितने पेड़ काटे गए (यह वनों की कटाई और वन संसाधनों पर दबाव का परिमाण बताता है) और पेड़ों की मृत्यु (यह बताता है कि कितने पेड़ बच नहीं पाए। यह वन पारिस्थितिकी तंत्र के प्रतिरोध और

स्वास्थ्य के बारे में बताता है)। चौथा मापदंड जलवायु प्रतिरोधी पारिस्थितिकी कार्यों के आधार पर पेड़ों की नस्लों का लंबाई के हिसाब से श्रेणीबद्ध करना है। इन कार्यों का जिम्मा वन–सकल पर्यावरण उत्पाद सूचकांक के

मूल्यांकन में शामिल शोध संस्थानों को दिया जाएगा। वक्त के हिसाब से होने वाले बदलावों को समझने के लिए शोधकर्ता पहला आंकड़ा जिस साल से संग्रह करते हैं या जिस साल के आंकड़ों पर विचार करते हैं, उस साल को संदर्भ वर्ष के तौर पर इस्तेमाल करते हैं। सूचकांक के लिए शोधकर्ता लगाए गए पेड़ और काटे गए पेड़ तथा खुद से मृत हुए पेड़ों की लंबाई के हिसाब से गुना करते हैं। हर मामले में एक औसत लंबाई श्रेणी ली जाती है। संदर्भ वर्ष के आंकड़े को जिस साल के (या चालू वर्ष) आंकड़े से निकाला जाता है, उससे घटा दिया जाता है। संदर्भ वर्ष के मूल्य के मुकाबले अंतर को सामान्यीकृत कर दिया जाता है।

जल मूल्यांकन

जल–सकल पर्यावरण उत्पाद सूचकांक जल संसाधनों की स्थिति का मूल्यांकन करता है। इसका लक्ष्य तालाबों, जल छिद्रों और चकबंधों के माध्यम से वर्षाजल संचय के जरिए पानी की उपलब्धता और गुणवत्ता सुधारने के मानव व सरकारी प्रयासों का मूल्यांकन करना है। इसका समीकरण तैयार करने के लिए चालू वर्ष में बचाए गए पानी को मानव निर्मित रिचार्ज ढांचों के जरिए सतह पर इकट्ठा किया गया संचित पानी माना जाता है। इसमें से संदर्भ वर्ष में संग्रह किए गए पानी के आंकड़ों को घटा दिया जाता है। इसमें जो अंतर आता है, उसका संदर्भ वर्ष के आंकड़े के हिसाब से राशनिंग कर दिया जाता है। जल–गुणवत्ता सूचकांक के लिए भी इसी तरह का जोड़–घटाव किया जाता है, जिसमें पीएच, चालकता, घुलित ऑक्सीजन और प्रदूषण के स्तर आदि शामिल होते हैं। अंतिम जल–सकल पर्यावरण उत्पाद सूचकांक पानी की मात्रा और इसके गुणवत्ता संकेतकों को मिलाकर निकाला जाता है।

वायु गुणवत्ता

वायु गुणवत्ता सूचकांक देशभर में मापा जाता है और प्रदूषक तत्वों जैसे पार्टिकुलेट मैटर, नाइट्रोजन डाई–ऑक्साइड और सल्फर डाई–ऑक्साइड की निगरानी के जरिए इसे आंकड़ों में पेश किया जाता है। यह सूचकांक शून्य से 500 तक होता है और उच्च आंकड़े खराब वायु गुणवत्ता का संकेत देते हैं। वायु–सकल पर्यावरण उत्पाद सूचकांक के लिए संदर्भ वर्ष के वायु गुणवत्ता सूचकांक को चालू वर्ष के वायु गुणवत्ता सूचकांक से घटा दिया जाता है और जो अंतर आता है, उसका संदर्भ वर्ष के आंकड़ों से राशनिंग कर दिया जाता है। इसके बाद इस आंकड़े को एक से घटा दिया जाता है जो वायु गुणवत्ता सूचकांक के साथ विपरीत संबंध के लिए उत्तरदायी होता है। सूचकांक में बढ़ोतरी खराब होती आबोहवा की तरफ इशारा करता है।

मृदा स्वास्थ्य

मृदा–सकल पर्यावरण उत्पाद सूचकांक मिट्टी के स्वास्थ्य पर भू प्रबंधन कार्यों के प्रभाव और साथ ही जरूरी पारिस्थितिकी तंत्र सेवाओं मसलन पौधों की वृद्धि, पोषण चक्र उपलब्ध कराने, पानी को साफ करने और कार्बन को पृथक करने की इसकी क्षमता का मूल्यांकन करता है। रासायनिक खाद के इस्तेमाल, वनों के उजाड़े जाने और अंधाधुंध शहरीकरण के चलते इन सेवाओं पर असर पड़ा है। मृदा–सकल पर्यावरण उत्पाद सूचकांक खास तौर पर जैविक तरीके से मिट्टी में बदलाव का मूल्यांकन करता है। इस मूल्यांकन में जैविक जमीन का विस्तार, पौष्टिक तत्व, मिट्टी के अपरदन की दर व अन्य जरूरी संकेतकों को शामिल किया जाता है। मृदा–सकल पर्यावरण उत्पाद सूचकांक निकालने के लिए संदर्भ वर्ष के जैविक भू क्षेत्र को चालू वर्ष के भू क्षेत्र से घटाया जाता है और अंतर का मानकीकरण किया जाता है।

उत्तराखंड का सकल पर्यावरण उत्पाद

इकोलॉजिकल इंडिकेटर्स में छपे अध्ययन में शोधकर्ता उत्तराखंड के सकल पर्यावरण उत्पाद सूचकांक के लिए मॉडल तैयार करने में वन, पानी, वायु और मिट्टी सूचकांक लेते हैं और सकल पर्यावरण उत्पाद सूचकांक निकालने के लिए एक समीकरण का इस्तेमाल करते हैं। उत्तराखंड में व्यापक वन, नदियां और हिमालय पर्वत श्रृंखला हैं। अतः इस क्षेत्र का गहरा पारिस्थितिक महत्व है और इसके प्राकृतिक पारिस्थितिक तंत्र की पर्यावरणीय सलामती के लिए सकल पर्यावरण उत्पाद एक अनूठा माध्यम उपलब्ध करा सकता है।

इस मॉडल के तहत सभी तत्वों के आंकड़े संग्रह किए गए हैं और अध्ययन कहता है, "हवा, पानी, मिट्टी और वनों की एकीकृत गतिशीलता को ध्यान में रखते हुए विस्तृत संभावित सकल पर्यावरण उत्पाद आंकड़ों के लिए 10,000 अनुरूपण किए गए।" सकारात्मक सकल पर्यावरण उत्पाद आंकड़े पारिस्थितिक लाभ व सतत कार्यों की मौजूदगी का संकेत देते हैं जबकि नकारात्मक आंकड़े उन क्षेत्रों की पर्यावरणीय चुनौतियों या दुर्दशा की तरफ इशारा करते हैं जहां त्वरित हस्तक्षेप की दरकार है। उत्तराखंड के अधिकतर आंकड़े शून्य के करीब हैं, जो बताता है कि राज्य में पर्यावरणीय संतुलन सुव्यवस्थित है व सकारात्मक और नकारात्मक असर प्रभावी तरीके से एक दूसरे का प्रतिकार करते हैं।

आंकड़ा इंगित करता है कि केंद्रीय क्लस्टर सिग्नल परिदृश्यों से अलग, खास पर्यावरण चर ने सकल पर्यावरण उत्पाद पर या तो बेहतरी या बदतरी के लिए गहरा प्रभाव डाला होगा। ग्राफ में आंकड़ा ऊपर की तरफ हल्का झुका दिखता है। इसका अर्थ यह है कि ज्यादातर स्थितियों में उत्तराखंड का पर्यावरण नुकसान की जगह पारिस्थितिक लाभ में भूमिका निभा रहा है। इस सकारात्मक रुझान का श्रेय क्षेत्र के पास उपलब्ध अकूत प्राकृतिक वास, संरक्षण के प्रयास और सतत् कार्यों को दिया जा सकता है।

(प्रख्यात पर्यावरणविद् पद्मभूषण डा. अनिल प्रकाश जोशी, एचईएससीओ के संस्थापक हैं। शिवम जोशी, देहरादून स्थित पेट्रोलियम व ऊर्जा अध्ययन विश्वविद्यालय मे शोधकर्ता हैं। दुर्गेश पंत, उत्तराखंड के विज्ञान व तकनीक की राज्य परिषद के महानिदेशक हैं। हिमानी पुरोहित एचईएससीओ में पर्यावरण विज्ञानी हैं। साभार : डाउन टू अर्थ)

विश्व जल दिवस (22 मार्च पर विशेष)

पानी की एक्सपायरी डेट क्या है?

- जहां नल में पानी हर दिन आता है, वहां पानी हर दिन बासी हो जाता है और हर दिन बहा दिया जाता हैं। यानी यहां पानी की एक्सपायरी डेट (समाप्ति की तिथि) – 1 दिन।
- जहां 2 दिन में पानी आता है, वहां 2 दिन में पानी बासी हो जाता है और बहा दिया जाता है।
- जहां आठ दिन बाद पानी आता है, वहां आठ दिन बाद पानी बासी हो जाता है।
- शादी समारोह में पानी की अगली बोतल से सामना होते ही हाथ में रखी पानी की आधी बोतल खत्म हो जाती है। और उसे फेंक दिया जाता है।
- रेगिस्तान में यात्रा करते समय अपने पास रखा पानी तब तक चलता है, जब तक पानी दिखाई न दे।
- अगले मानसून तक बांध में पानी ताजा बरकरार रहेगा 'यदि सूखे की स्थिति बनती है। तो यह दो से तीन साल तक ताजा पानी बना रहता है।...
- जहां 50 फीट के बोरवेल से पानी निकाला जाता है। वह जमीन के नीचे सैकड़ों साल पुराना है। यानी सैकड़ों साल पुराना पानी पीने के लिए सुरक्षित है। एक्सपायरी डेट सैकड़ों साल।
- जहां 400 से 500 फीट पर पानी के बोरवेल से पानी निकाला जाता है। वह हजारों साल तक जमीन के अंदर जमा रहता है। फिर भी चलता रहता है।

- कुल मिलाकर पानी की समाप्ति की तिथि मनुष्य अपनी सुविधा व सीमित बुद्धि पर तय करता है।
- पानी का संयम से उपयोग करें.....जल है तो कल है।

(पर्यावरण तथा विकास पर केंद्रित रियो डि जेनेरियो के संयुक्त राष्ट्र सम्मेलन में वर्ष 1992 में विश्व जल दिवस की पहल की गई। वर्ष 1993 में 22 मार्च को पहली बार 'विश्व जल दिवस' का आयोजन किया गया। इसके बाद से प्रतिवर्ष लोगों के बीच जल का महत्व, आवश्यकता और संरक्षण के बारे में जागरूकता बढ़ाने के लिये 22 मार्च को **"विश्व जल दिवस"** मनाया जाता है।)

जलती धरती, बेहाल जीवन

• **डॉ अनिल कुमार, वरीय सलाहकार (पर्यावरण एवं जलवायु परिवर्तन)**
बिहार राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण

विश्वभर में तापमान की वृद्धि एक गंभीर चुनौती है, और विज्ञानियों के अनुसार, जलवायु परिवर्तन के कारण भविष्य में और अधिक गर्मी बढ़ने की उम्मीद है। यह गर्मी जलती धरती के जीवों के लिए भी खतरा है। एक हाल के अध्ययन ने भविष्य की गर्मी की लहरों की जांच की है, जिसमें विभिन्न जलवायु स्थितियों के अनुसार अवलोकन और मॉडल सिमुलेशन का उपयोग किया गया – ऐतिहासिक प्लस 1.5 डिग्री सेल्सियस और प्लस 2.0 डिग्री सेल्सियस गर्म दुनिया। यह जांच बताती है कि जबकि उच्चतम तापमान में बड़े रूप से वृद्धि भले ही नहीं हो, बल्कि गर्मी की लहरें अधिक समय तक रह सकती हैं और बड़े क्षेत्रों को आवरण कर सकती हैं। यह खासकर मानसून के मौसम में जब आर्द्रता अधिक होती है, स्वास्थ्य के लिए अधिक खतरे पैदा करता है। इसका मतलब है कि भारत में नए क्षेत्र गर्मी की लहरों के आगोश में आ सकते हैं। इस अध्ययन के अनुसार, भविष्य की गर्मी की लहरों की घातकता और अधिकता पिछले अवलोकनों की तुलना में बड़ी वृद्धि होने की संभावना है। यह वर्तमान आपदा योजनाओं के आगे बढ़कर लंबे समय के अनुकूलन रणनीतियों की आवश्यकता को बताता है।

वैश्विक स्तर पर जलवायु परिवर्तन के एक अन्य अध्ययन से पता चलता है कि अगर ग्लोबल वार्मिंग को रोकने के प्रयास नहीं किए गए, तो आगामी वर्षों में धरती का औसत तापमान 1.5 से 2 डिग्री सेल्सियस तक बढ़ सकता है। इस तापमान वृद्धि से गर्मी की लहरें न केवल अधिक बार होंगी, बल्कि अधिक तीव्र और लंबी भी होंगी। विश्वभर में तापमान में वृद्धि के कारण विभिन्न पर्यावरणीय और सामाजिक समस्याएं उत्पन्न हो रही हैं। जलवायु परिवर्तन के कारण गर्मी की लहरें अधिक तीव्र और लंबी होती जा रही हैं, जिससे जीवन और संपत्ति को खतरा पहुँच रहा है। ग्लोबल तापमान में वृद्धि न केवल प्राकृतिक दुनिया के लिए चिंताजनक है, बल्कि यह मानव समाज पर भी गहरे प्रभाव डाल रही है। वैज्ञानिक समुदाय ने विभिन्न अध्ययनों के माध्यम से यह चेतावनी दी है कि यदि उत्सर्जन में कमी नहीं की गई, तो धरती का औसत तापमान अगले कुछ दशकों में खतरनाक स्तर तक पहुँच सकता है।

तापमान में वृद्धि से विश्व के कई जंगलों में आग की घटनाएँ बढ़ गई हैं। उदाहरण के लिए, ऑस्ट्रेलिया और कैलिफोर्निया में हाल के वर्षों में देखी गई जंगल की आग इसके प्रमुख उदाहरण हैं। इन आगों ने वन्यजीवन को नुकसान पहुंचाया है और कार्बन उत्सर्जन को और बढ़ाया है। वैश्विक तापमान वृद्धि के कारण पानी के स्रोत सिकुड़ रहे हैं। उच्च तापमान के कारण हिमालय और अन्य पर्वतीय क्षेत्रों में ग्लेशियरों का पिघलना तेज हो गया है, जिससे अनेक नदियों का जल स्तर अस्थायी रूप से बढ़ जाता है, परंतु दीर्घकालिक में यह सूखा पैदा कर सकता है। वैज्ञानिक समुदाय ने आगाह किया है कि अगर वर्तमान उत्सर्जन दर जारी रही तो विश्व का तापमान 2100 तक 4 डिग्री सेल्सियस से अधिक बढ़ सकता है। इससे न केवल प्राकृतिक आपदाएं जैसे कि तूफान, बाढ़, और सूखा बढ़ेंगे, बल्कि आर्थिक और सामाजिक अस्थिरता में भी वृद्धि होगी। इस चुनौती का मुकाबला करने के लिए वैश्विक सहयोग और स्थायी एवं नवीनीकृत ऊर्जा स्रोतों की ओर रुख करने की आवश्यकता है। सौर, वायु, एवं जल ऊर्जा जैसे नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों का विकास और इसे अपनाना इस दिशा में महत्वपूर्ण कदम हो सकता है। भारत जलवायु परिवर्तन के खतरों के प्रति अत्यधिक संवेदनशील है, खासकर गर्मी की लहरों के कारण। भारत में तापमान में वृद्धि के प्रभाव स्पष्ट रूप से दिखाई दे रहे हैं। गर्मी की लहरों की आवृत्ति और तीव्रता में वृद्धि के कारण, विशेषकर उत्तर और मध्य भारत में, जन स्वास्थ्य पर बड़े पैमाने पर असर पड़ रहा है। मानसून के दौरान बढ़ती आर्द्रता के साथ, गर्मी की लहरें और भी खतरनाक हो जाती हैं।

20वीं शताब्दी के मध्य से भारत में औसत तापमान में 0.5 डिग्री सेल्सियस की वृद्धि हुई है। भविष्य में तापमान में वृद्धि जारी रहने की संभावना है, जिससे अधिक तीव्र और लगातार गर्मी की लहरें पैदा होंगी। भारतीय जीवन को भीषण गर्मी ने जीवन बेहाल कर दिया है। वर्ष–2023 में, भारत ने अभूतपूर्व गर्मी की लहर का अनुभव किया, जिसके कारणबड़ी संख्या में लोगों की मौतहो गई और बुनियादी ढांचेको भारी नुकसान हुआ। उत्तर और मध्य भारत सबसे अधिक प्रभावित हुए, जहां तापमान 50 डिग्री सेल्सियस को पार कर गया। गर्मी की लहरों ने किसानों, आदिवासी समुदायों, और शहरी गरीबों को बुरी तरह प्रभावित किया। बिहार के कम से कम 10 जिलों में 07 जून, 2023 को पारा 44 डिग्री सेल्सियस के पार चला गया।

कोलकाता में भीषण गर्मी के बीच महिला अपने बंदर को पानी पिलाती हुई (साभार : टीओआई)

बिहार भीषण गर्मी के आगोश में

बिहार, जहां कृषि प्रमुख आजीविका है, जलवायु परिवर्तन से बुरी तरह प्रभावित हो रहा है। बढ़ते तापमान, अनियमित वर्षा, और चरम मौसम की घटनाओं का कृषि, जल, वन, जीव, आजीविका, और स्वास्थ्य पर विनाशकारी प्रभाव पड़ रहा है। अत्यधिक गर्मी और सूखे के कारण फसल उत्पादन में कमी हो रही है। अनियमित वर्षा और बाढ़ फसलों को नुकसान पहुंचा रहे हैं।

जल संकट सिंचाई को मुश्किल बना रहा है। कीटों और बीमारियों का प्रकोप बढ़ रहा है। सूखा भूजल स्तर को कम कर रहा है और पानी की कमी पैदा कर रहा है। नदियों और झीलों का जल स्तर घट रहा है। चरम मौसम की घटनाओं से वन्यजीवों का आवास नष्ट हो रहा है। जलवायु परिवर्तन के प्रति संवेदनशील प्रजातियां विलुप्त होने के खतरे में हैं। किसानों, मछुआरों, और वन श्रमिकों की आजीविका खतरे में है। गरीबी और असमानता बढ़ रही है। गर्मी से संबंधित बीमारियां, जैसे हीट स्ट्रोक और डिहाइड्रेशन बढ़ रही हैं। मलेरिया, डेंगू, और चिकनगुनिया जैसी जलजनित बीमारियां अधिक बार हो रही हैं। वायु प्रदूषण श्वसन संबंधी बीमारियों को बढ़ा रहा है। 2023 में, बिहार में अभूतपूर्व गर्मी की लहर के कारण बड़ी संख्या में लोगों की मौत हो गई और फसलों को भारी नुकसान हुआ। पटना में भूजल स्तर पिछले दशक में 20 मीटर तक गिर गया।

भारत ने ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन को कम करने और जलवायु परिवर्तन के अनुकूल होने के लिए कई नीतियां शुरू की हैं। राष्ट्रीय स्वच्छ ऊर्जा मिशन, पर्यावरण (संरक्षण) अधिनियम, और राष्ट्रीय जलवायु परिवर्तन रणनीति कुछ प्रमुख उदाहरण हैं। भारत ने 2030 तक अपनी गैर–जीवाश्म ईंधन क्षमता को 450 गीगावाट तक बढ़ाने और 2070 तक शुद्ध–शून्य उत्सर्जन प्राप्त करने का महत्वाकांक्षी लक्ष्य निर्धारित किया है। बिहार सहित पूरे देश में जलवायु परिवर्तन से निपटना एक तत्काल और महत्वपूर्ण चुनौती है। ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन को कम करने, अनुकूलन रणनीतियों को लागू करने और सबसे कमजोर समुदायों की रक्षा करने के लिए सभी स्तरों पर कार्रवाई करने की आवश्यकता है।

जलवायु परिवर्तन : सर्दियों में उत्तर और पूर्वी भारत रहे सबसे प्रदूषित, राजस्थान–बिहार के छोटे शहर नए हॉटस्पॉट बने

सेंटर फॉर साइंस एंड एनवायरन्मेंट ने एक अक्टूबर, 2023 से 31 जनवरी, 2024 यानी सर्दियों के मौसम में देश के शहरों की हवा की गुणवत्ता का विश्लेषण किया

जैसे ही सर्दी शुरू हुई, जहरीले वायु प्रदूषण के बढ़ने से एक बार फिर लोगों के स्वास्थ्य पर असर डाला। सितंबर–अक्टूबर में कम बारिश और सर्दी के पूरे मौसम में धीमी हवाओं जैसे मौसम संबंधी कारकों के कारण वायु प्रदूषण में वृद्धि हुई। दिल्ली स्थित थिंक टैंक सेंटर फॉर साइंस एंड एनवायरन्मेंट ने सर्दियों की वायु गुणवत्ता की समीक्षा के बाद रिपोर्ट जारी की है, जिसमें काफी चिंताजनक रुझान सामने आए हैं। यह समीक्षा बताती है कि दिल्ली और चंडीगढ़ देश के सबसे प्रदूषित केंद्र शासित प्रदेश/राज्य थे, जहां पीएम 2.5 का स्तर क्रमशः 188 माइक्रोग्राम प्रति घन मीटर और 100.9 माइक्रोग्राम प्रति घन मीटर दर्ज किया गया। इसके विपरीत, कर्नाटक सर्दियों के औसत 32 माइक्रोग्राम प्रति घन मीटर के साथ स्वच्छ हवा के प्रतीक के रूप में उभरा।

साल 2023–24 के सर्दियों के मौसम की निर्णायक रिपोर्ट बताती है कि उत्तर और पूर्वी भारत सबसे प्रदूषित क्षेत्र बना रहा। उत्तर भारत में पिछली सर्दियों की तुलना में हवा की गुणवत्ता में उल्लेखनीय गिरावट देखी गई, जबकि पूर्वी भारत में सुधार के संकेत दिखे। दक्षिण भारत ने सबसे कम पीएम 2.5 स्तर के साथ अपना शीर्ष स्थान बनाए रखा। शहर–स्तरीय विश्लेषण को गहराई से देखने पर पता चला कि बिहार और राजस्थान के छोटे शहर दिल्ली जैसे प्रमुख महानगरीय क्षेत्रों को टक्कर देते हुए प्रदूषण हॉटस्पॉट के रूप में उभरे हैं।

बिहार में बेगूसराय और राजस्थान में हनुमानगढ़ जैसे शहर राष्ट्रीय राजधानी में होने वाले प्रदूषण के स्तर के बराबर रहे। इसके अलावा, दक्षिण भारत और हिमालयी क्षेत्र के औद्योगिक शहर भी उच्च प्रदूषण स्तर से जूझते पाए गए। इसके विपरीत, सिक्किम में गंगटोक और असम में सिलचर जैसे शहर की हवा स्वच्छ रही। दिवाली और उसके बाद देशभर में असाधारण रूप से खराब वायु गुणवत्ता का दौर आया, जिसमें त्योहार के बाद दैनिक औसत पीएम 2.5 का स्तर 120 माइक्रोग्राम प्रति घन मीटर तक पहुंच गया। एनसीआर में दिवाली से 10 दिन पहले वायु प्रदूषण अपने चरम पर पहुंच गया, जिसका कारण त्योहार के दौरान पराली जलाना और पटाखों पर प्रतिबंध जैसे कारक थे।

तीन नवंबर, 2023 को प्रदूषण का स्तर उत्तर भारत का 24 घंटे के औसत 156.7 माइक्रो ग्राम प्रति घन मीटर और एनसीआर में 218.4 माइक्रोग्राम प्रति घन मीटर तक पहुंच गया, जो दिवाली के अब तक के उच्चतम स्तर 202 माइक्रोग्राम प्रति घन मीटर को पार कर गया। सर्दी के मौसम को 1 अक्टूबर, 2023 से 31 जनवरी, 2024 तक की अवधि के रूप में परिभाषित किया गया है। पिछली सर्दियों की तुलना में, इस सीजन में उत्तरपूर्वी शहरों में पीएम 2.5 के स्तर में 13 प्रतिशत और उत्तरी शहरों में 8 प्रतिशत की वृद्धि हुई, वहीं एनसीआर के शहरों में 14 प्रतिशत की वृद्धि हुई, लेकिन पूर्वी शहरों में 29 प्रतिशत की गिरावट देखी गई।

देश के पश्चिम और दक्षिण के शहरों में प्रदूषण में 10 प्रतिशत की कमी देखी गई, जबकि मध्य भारतीय शहरों में न्यूनतम परिवर्तन देखा गया। कुल मिलाकर, देश में पिछले वर्ष की तुलना में शीतकालीन प्रदूषण स्तर में 8 प्रतिशत की कमी देखी गई। हमने अपने इस विश्लेषण के बाद यह निष्कर्ष निकाला है कि भारत के वायु प्रदूषण संकट को दूर करने के लिए तत्काल उपायों की आवश्यकता है। और अलग–अलग क्षेत्रों में वायु गुणवत्ता में असमानताएं एक बड़ी चुनौती बनता जा रहा है।

मौसम संबंधी कारकों, क्षेत्रीय शिखरों और मौसमी उतार–चढ़ाव के प्रभाव को ध्यान में रखते हुए, यह स्पष्ट हो जाता है कि कोई भी क्षेत्र इस सर्वव्यापी समस्या से अछूता नहीं है। खराब हवा लाखों लोगों के स्वास्थ्य और कल्याण को खतरे में डालती है और इसलिए, विशेषज्ञ नीति निर्माताओं, उद्योगों और व्यक्तियों से एक साथ आने और स्थायी समाधान लागू करने का आग्रह करते हैं।

आखिर बेगूसराय की हवा क्यों हुई जहरीली?

बेगूसराय जिले के बरौनी में स्टील रिफाइनरी और बिजलीघर जैसे कई बड़े कल–कारखाने हैं। बेतहाशा बढ़े निर्माण कार्यों से भी आब–ओ–हवा खराब हुई है। बिहार राज्य प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड के आंकड़े के अनुसार राज्य में वायु प्रदूषण का सबसे बड़ा कारक (22 प्रतिशत) घरेलू जलावन (डोमेस्टिक बर्निंग) है। इसके बाद मोटर यातायात परिवहन से 19 प्रतिशत, धूल से 15 फीसद, उद्योगों से 14, अवशिष्ट जलाने से 11 और डीजल जेनरेटर से 5 फीसदी प्रदूषण फैलता है। ईंट बनाने वाले पुराने चिमनी भट्टे अवैध घोषित कर दिए गए। लेकिन चोरी–छिपे ये कई जगहों पर चलाए जा रहे हैं और इससे भी प्रदूषण काफी फैल रहा है।

(स्रोत : सीपीसीबी का रियल टाइम वायु गुणवत्ता डेटा)
(साभार : डाउन टू अर्थ)

साहित्य : विश्व कविता दिवस (21 मार्च) पर विशेष

याद आती है माँ

=≈=====≈=≈

- **प्रणव प्रियदर्शी**

(युवा कवि प्रणव पेशे से पत्रकार हैं। प्रभात खबर, रांची में कार्यरत हैं। मूलतः बिहार के मिथिलांचल के रहने वाले हैं। इनकी शिक्षा–दीक्षा रांची में हुई है।) (सोशल मीडिया से साभार)

.....

जब कभी
जिंदगी को बेअदब बोझ समझ
जीने लगता हूँ
और हीनता का शिकार होकर
निराशा के भँवर में फँसने लगता हूँ
याद आती है माँ!
जो नौ महीने तक पूर्ण सजगता से
अपनी संतान का बोझ ढोने में ही
अपने अस्तित्व की गरिमा समझती है।
माँ कभी नहीं कहती
मैं कोई बोझ ढो रही।।
जब कभी
अनचाही परिस्थितियों के
पंजे में पड़कर छटपटाने लगता हूँ
और अपनी पीड़ाओं में
पिघलकर जमने लगता हूँ
याद आती है माँ!
जो अपने बच्चे को जन्म देते समय
प्रसव की पीड़ा से छटपटाती हुई
वात्सल्य में निमग्न हो जाती है।
माँ कभी नहीं सोचती
मैं "माँ" क्यों बनी।।
जब कभी
किसी की ललकार
या छोटी–छोटी बातों से चिढ़ने लगता हूँ
और अपनी सहनशीलता से उखड़
आक्रोश में आ जाता हूँ
याद आती है माँ!
जो अपने नवजात बच्चे के
रोने में छिपी ललकार देख
उससे लड़ने नहीं लगती
बल्कि सभी काम छोड़ उसके पास आती है
और चेहरे पर बिना किसी शिकन के
उसे अपनी गोद में समेट लेती है।
माँ कभी नहीं ऊबती
न ही अपने मातृत्व को कोसती।।
जब कभी
चारों ओर फैले
शिकारी जाल में उलझ जाता हूँ
और भूत–भविष्य की चिंता में
रातभर जगा रह जाता हूँ
याद आती है माँ!
जो अपने बेचैन बच्चे के सिरहाने में बैठ
उसे लोरी सुना सुलाया करती है।
माँ कब सोती–कब जाग जाती है
यह सिर्फ वही जानती है।।

साहित्य : रेणु जयंती (04 मार्च) पर विशेष

कहानी : ठेस

फणीश्वरनाथ रेणु का जन्म 4 मार्च, 1921 को बिहार के अररिया जिला (तब के पूर्णिया) में फारबिसगंज के नजदीक औराही हिंगना गाँव में हुआ था। उनकी स्कूली शिक्षा मूल रूप से भारत और नेपाल दोनों देशों में हुई। मैट्रिक की परीक्षा उन्होंने नेपाल के बिराटनगर से पास की और इंटर आर्ट्स की परीक्षा काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी से। हिंदी साहित्य में इन्होंने अनेक उपन्यास, कहानियां एवं निबंध लिखे हैं। इनका लिखा 'मैला आँचल' आंचलिक उपन्यास का कल्ट है। इनके कहानी के प्रमुख किरदार ऐसे होते हैं जिनके अंदर आप ना चाहते हुए भी अपनी छवि देखते हैं। 11 अप्रैल, 1977 को रेणु जी इस मायावी दुनिया को छोड़ हमेशा के लिए पंचतत्व में विलीन हो गए। लेकिन इनकी लिखी कहानियां उन्हें अमर बना गईं। रेणु से पहले और ना उनके बाद कोई ऐसा कहानीकार हुआ, जो अपने गाँव, अपने देहात को इस कदर अपने अंदर समेटे हुए हो। गाँव–समाज का जो चित्रण उन्होंने अपनी कहानियों में किया है वो बिरले ही कहीं और देखने को मिलता है। ऐसे ही उनकी लिखी एक आंचलिक कहानी है 'ठेस'। आईए पढ़ें....

खेती–बाड़ी के समय गाँव के किसान सिरचन की गिनती नहीं करते। लोग उसको बेकार ही नहीं, 'बेगार' समझते हैं। इसलिए खेत–खलिहान की मजदूरी के लिए कोई नहीं बुलाने जाता है सिरचन को। क्या होगा उसको बुलाकर? दूसरे मजदूर खेत पहुँचकर एक–तिहाई काम कर चुकेंगे, तब कहीं सिरचन राय हाथ में खुरपी डुलाता हुआ दिखाई पड़ेगा। पगडण्डी पर तोल–तोलकर पाँव रखता हुआ, धीरे–धीरे। मुफ्त में मजदूरी देनी हो तो और बात है।

आज सिरचन को मुफ्तखोर, कामचोर या चटोर कह ले कोई। एक समय था जबकि उसकी मडैया के पास बड़े–बड़े बाबू लोगों की सवारियाँ बँधी रहती थीं। उसे लोग पूछते ही नहीं थे, उसकी खुशामद भी करते थे। अरे, सिरचन भाई! अब तो तुम्हारे ही हाथ में यह कारीगरी रह गई है सारे इलाके में। एक दिन भी समय निकालकर चलो। कल बड़े भैया की चिट्ठी आई है शहर से–सिरचन से एक जोड़ा चिक बनवाकर भेज दो। मुझे याद है...मेरी माँ जब कभी सिरचन को बुलाने के लिए कहती, मैं पहले ही पूछ लेता, "भोग क्या–क्या लगेगा?"

माँ हँसकर कहती, "जा–जा, बेचारा मेरे काम में पूजा–भोग की बात नहीं उठाता कभी।" ब्राह्मणटोली के पंचानन्द चौधरी के छोटे लड़के को एक बार मी सामने ही बेपानी कर दिया था सिरचन ने–"तुम्हारी भाभी नाखून

में खाँटकर तरकारी परोसती है और इमली का रस डालकर कढ़ी तो हम कहार–कुम्हारों की घरवाली बनाती है। तुम्हारी भाभी ने कहाँ से बनाई!" इसलिए सिरचन को बुलाने से पहले मैं माँ को पूछ लेता.....।

सिरचन को देखते ही माँ हुलसकर कहती, "आओ सिरचन! आज नेनू मथ रही थी तो तुम्हारी याद आई। घी की (खखोरन) डाड़ी के साथ चूड़ा तुमको बहुत पसन्द है न...! और बड़ी बेटी ने ससुराल से संवाद भेजा है, उसकी ननद रूठी हुई है, मोथी की शीतलपाटी के लिए।" सिरचन अपनी पनियायी जीभ को सम्हालकर हँसता–"घी की सौंधी सुगन्ध सूंघकर ही आ रहा हूँ, काकी! नहीं तो इस शादी–ब्याह के मौसम में दम मारने की भी छुट्टी कहाँ मिलती है?"

सिरचन जाति का कारीगर है। मैंने घण्टों बैठकर उसके काम करने के ढंग को देखा है। एक–एक मोथी और पटेर को हाथ में लेकर बड़े जतन से उसकी कुच्ची बनाता। फिर, कुच्चियों को रँगने से लेकर सुतली सुलझाने में पूरा दिन समाप्त।...काम करते समय उसकी तन्मयता में जरा भी बाधा पड़ी कि गेहुँअन साँप की तरह फुफकार उठता–"फिर किसी दूसरे से करवा लीजिए काम! सिरचन मुँहजोर हैं, कामचोर नहीं।" बिना मजदूरी के पेट–भर भात पर काम करने वाला कारीगर! दूध में कोई मिठाई न मिले तो कोई बात नहीं, किन्तु बात में जरा भी झाल वह नहीं बरदाश्त कर सकता।

सिरचन को लोग चटोर भी समझते हैं...तली–बघारी हुई तरकारी, दही की कढ़ी, मलाईवाला दूध, इन सबका प्रबन्ध पहले कर लो, तब सिरचन को बुलाओ, दुम हिलाता हुआ हाजिर हो जाएगा। खाने–पीने में चिकनाई की कमी हुई कि काम की सारी चिकनाई खत्म! काम अधूरा रखकर उठ खड़ा होगा–"आज तो अब अधकपाली दर्द से माथा टनटना रहा है। थोड़ा–सा रह गया है, किसी दिन आकर पूरा कर दूंगा।" किसी दिन'–माने कभी नहीं! मोथी घास और पटरे की रंगीन शीतलपाटी, बाँस की तीलियों की झिलमिलाती चिक, सतरंगे डोर के मोढ़े, भूसी–चुन्नी रखने के लिए पूँज रस्सी के बड़े–बड़े जाले, हलवाहों के लिए ताल के सूखे पत्तों की छतरी–टोपी तथा इसी तरह के बहुत–से काम हैं जिन्हें सिरचन के सिवा गाँवों में और कोई नहीं जानता। यह दूसरी बात है कि अब गाँव में ऐसे कामों को बेकाम का काम समझते हैं लोग–बेकाम का काम, जिसकी मजदूरी में अनाज या पैसे देने की कोई जरूरत नहीं। पेट–भर खिला दो, काम पूरा होने पर एकाध पुराना–धुराना कपड़ा देकर विदा करो। वह कुछ भी नहीं बोलेगा।

....कुछ भी नहीं बोलगा, ऐसी बात नहीं। सिरचन को बुलाने वाले जानते हैं, सिरचन बात करने में भी कारगर है।...महाजन टोले के भज्जू महाजन की बेटी सिरचन की बात सुनकर तिलमिला उठी थी–"मैं माँ से जाकर कहती हूँ। इतनी बड़ी बात!" "बड़ी बात ही है बिटिया! बड़े लोगों की बस बात ही बड़ी होती है। नहीं तो दो–दो पटेर की पाटियों का काम सिर्फ खेसारी का सत्तू खिलाकर कोई करवाए भला? यह तुम्हारी माँ ही कर सकती है बबुनी!" सिरचन ने मुस्कराकर जवाब दिया था...

उस बार मेरी सबसे छोटी बहन की विदाई होने वाली थी। पहली बार ससुराल जा रही थी मानू। मानू के दूल्हे ने पहले ही बड़ी भाभी को खत लिखकर चेतावनी दे दी है –"मानू के साथ मिठाई की पतीली न आए, कोई बात नहीं। तीन जोड़ी फैशनेबल चिक और पटेर की दो शीतलपाटियों के बिना आएगी मानू तो...।" भाभी ने हँसकर कहा, "बैरंग वापस!" इसलिए एक सप्ताह पहले से ही सिरचन को बुलाकर काम पर तैनात करवा दिया था माँ ने–"देख सिरचन! इस बार नई धोती दूंगी, असली मोहर छापवाली धोती। मन लगाकर ऐसा काम करो कि देखने वाले देखकर देखते ही रह जाएँ।"

पान जैसी पतली छुरी से बाँस की तीलियों और कमानियों को चिकनाता हुआ सिरचन अपने काम में लग गया। रंगीन सुतलियों में झब्बे डालकर वह चिक बुनने बैठा...डेढ़ हाथ की बिनाई देखकर ही लोग समझ गए कि इस बार एकदम नए फैशन की चीज बन रही है जो पहले कभी नहीं बनी। मँझली भाभी से नहीं रहा गया। परदे

की आड़ से बोली, "पहले ऐसा जानती कि मोहर छापवाली धोती देने से ही अच्छी चीज बनती है तो भैया को खबर भेज देती।"

काम में व्यस्त सिरचन के कानों में बात पड़ गई। बोला, "मोहर छापवाली धोती के साथ रोशमी कुरता देने पर भी ऐसी चीज नहीं बनती बहुरिया। मानू दीदी काकी की सबसे छोटी बेटी है...मानू दीदी का दूल्हा अफसर आदमी है!" मँझली भाभी का मुँह लटक गया। मेरी चाची ने फुसफुसाकर कहा, "किससे बात करती है बहू? मोहर छापवाली धोती नहीं, मुँगिया–लड्डू। बेटी की विदाई के समय रोज मिठाई जो खाने को मिलेगी। देखती है न!"

दूसरे दिन चिक की पहली पाँति में सात तारे जगमगा उठे, सात रंग के। सतभैया तारा! सिरचन जब काम में मगन रहता है तो उसकी जीभ जरा बाहर निकल आती है, होंठ पर। अपने काम में मगन सिरचन को खाने–पीने की सुध नहीं रहती। चिक में सुतली के फन्दे डालकर उसने पास पड़े सूप पर निगाह डाली–चिउरा और गुड़ का एक सूखा ढेला। मैंने लक्ष्य किया, सिरचन की नाक के पास दो रेखाएँ उभर आईं। मैं दौड़कर माँ के पास गया। "माँ, आज सिरचन को कलेवा किसने दिया है, सिर्फ चिउरा और गुड़?"

माँ रसोईघर के अन्दर पकवान आदि बनाने में व्यस्त थी। बोली, "मैं अकेली कहाँ–कहाँ क्या–क्या देखू!... अरी मँझली, सिरचन को बुंदिया क्यों नहीं देती?"

"बुंदिया मैं नहीं खाता, काकी!"

सिरचन के मुँह में चिउरा भरा हुआ था। गुड़ का ढेला सूप में एक किनारे पर पड़ा रहा, अछूता।

माँ की बोली सुनते ही मँझली भाभी की भौंहें तन गईं। मुट्ठी–भर बँदिया सूप में फेंककर चली गई।

सिरचन ने पानी पीकर कहा, "मँझली बहूरानी अपने मैके से आई हुई मिठाई भी इस तरह हाथ खोलकर बाँटती है क्या?"

बस, मँझली भाभी अपने कमरे में बैठकर रोने लगी। चाची ने माँ के पास जाकर लगाया–"छोटी जाति के आदमी का मुँह भी छोटा होता है। मुँह लगाने से सिर पर चढ़ेगा ही।...किसी के नैहर–ससुराल की बात क्यों करेगा वह?"

मँझली भाभी माँ की दुलारी बहू है। माँ तमककर बाहर आई – "सिरचन, तुम काम करने आए हो, अपना काम करो। बहुओं से बतकुट्टी करने की क्या जरूरत? जिस चीज की जरूरत हो, मुझसे कहो।'

सिरचन का मुँह लाल हो गया। उसने कोई जवाब नहीं दिया। बाँस में टंगे हुए अधूरे चिक में फन्दे डालने लगा।

मानू पान सजाकर बाहर बैठकखाने में भेज रही थी। चुपके से पान का एक बीड़ा सिरचन को देती हुई बोली, इधर–उधर देखकर–"सिरचन दादा, काम–काज का घर! पाँच तरह के लोग पाँच किस्म की बात करेंगे। तुम किसी की बात पर कान मत दो।" सिरचन ने मुस्कराकर पान का बीड़ा मुँह में ले लिया। चाची अपने कमरे से निकल रही थी। सिरचन को पान खाते देखकर अवाक् हो गई। सिरचन ने चाची को अपनी ओर अचरज से घूरते देखकर कहा, "छोटी चाची, जरा अपनी डिबिया का गमकौआ जर्दा तो खिलाना–बहुत दिन हुए..."

चाची कई कारणों से जली–भुनी रहती थी, सिरचन से। गुस्सा उतारने का ऐसा मौका फिर नहीं मिल सकता। झनकती हुई बोली, "मसखरी करता है? तुम्हारी बढ़ी हुई जीभ में आग लगे। घर में भी पान और गमकौआ जर्दा खाते हो? मेरा कलेजा धड़क उठा... यत्परो नास्ति!

बस, सिरचन की उँगलियों में सुतली के फन्दे पड़ गए। मानो, कुछ देर तक वह चुपचाप बैठा पान को मुंह में घुलाता रहा। फिर, अचानक उठकर पिछवाड़े पीक थूक आया। अपनी छुरी, हँसिया वगैरह समेट–सम्हालकर झोले में रखे। टंगी हुई अधूरी चिक पर एक निगाह डाली और हनहनाता हुआ आँगन से बाहर निकल गया। चाची बड़बड़ायी– "अरे बाप रे बाप! इतनी तेजी! कोई मुफ्त में तो काम नहीं करता। आठ रुपये में मोहर छापवाली धोती आती है... इस मुँहझौंसे के न मुँह में लगाम है, न आँख में शील। पैसा खर्च करने पर सैकड़ों चिकें मिलेंगी। बाँतरटोली की औरतें सिर पर गट्ठर लेकर गली–गली मारी फिरती हैं।"

मानू कुछ नहीं बोली। चुपचाप अधूरी चिक को देखती रही।... सातों तारे मन्द पड़ गये। माँ बोली, "जाने दे बेटी! जी छोटा मत कर, मानू! मेले से खरीदकर भेज दूंगी।" मानू को याद आई, विवाह में सिरचन के हाथ की शीतलपाटी दी थी माँ ने। ससुरालवालों ने न जाने कितनी बार खोलकर दिखलाया था पटना और कलकत्ता के मेहमानों को। वह उठकर बड़ी भाभी के कमरे में चली गई।

मैं सिरचन को मनाने गया। देखा, एक फटी हुई शीतलपाटी पर लेटकर वह कुछ सोच रहा है। मुझे देखते ही बोला, "बबुआजी! अब नहीं। कान पकड़ता हूँ, अब नहीं।...मोहर छापवाली धोती लेकर क्या करूँगा? कौन पहनेगा? ससुरी खुद मरी, बेटे–बेटियों को ले गई अपने साथ। बबुआजी, मेरी घरवाली जिन्दा रहती तो मैं ऐसी दुर्दशा भोगता? वह शीतलपाटी उसी की बुनी हुई है। इस शीलतपाटी को छूकर कहता हूँ, अब यह काम नहीं करूँगा।...गाँव–भर में तुम्हारी हवेली में मेरी कदर होती थी।...अब क्या?"

मैं चुपचाप वापस लौट आया। समझ गया, कलाकार के दिल में ठेस लगी है। वह नहीं आ सकता। मानू कुछ नहीं बोली।...बेचारी! किन्तु, मैं चुप नहीं रह सका–"चाची और मँझली भाभी की नजर न लग जाए इसमें भी!"

मानू को ससुराल पहुँचाने मैं ही जा रहा था। स्टेशन पर सामान मिलाते समय देखा...मानू बड़े जतन से अधूरी चिक को मोड़कर लिए जा रही है अपने साथ। मन–ही–मन सिरचन पर गुस्सा हो आया। चाची के सुर–में–सुर मिलाकर कोसने को जी हुआ।...कामचोर, चटोर! गाड़ी आई। सामान चढ़ाकर मैं दरवाजा बन्द कर रहा था कि प्लेटफार्म पर दौड़ते हुएं सिरचन पर नजर पड़ी–"बबुआजी!" उसने दरवाजे के पास आकर पुकारा।

"क्या है?" मैंने खिड़की से गरदन निकालकर झिड़की के स्वर में कहा। सिरचन ने पीठ पर लदे हुए बोझ को उतारकर मेरी ओर देखा–दौड़ता आया हूँ।...दरवाजा खोलिए! मानू दीदी कहाँ हैं? एक बार देखू!" मैंने दरवाजा खोल दिया "सिरचन दादा!" मानू इतना ही बोल सकी। खिड़की के पास खड़े होकर सिरचन ने हकलाते हुए कहा – "यह मेरी ओर से है...सब चीज है दीदी! शीतलपाटी, चिक और एक जोड़ी आसनी, कुश की।"

गाड़ी चल पड़ी।

मानू मोहर छापवाली धोती का दाम निकालकर देने लगी। सिरचन ने जीभ को दाँत से काटकर दोनों हाथ जोड़ दिए। मानू फूट–फूटकर रो रही थी। मैं बण्डल को खोलकर देखने लगा–ऐसी कारीगरी, ऐसी बारीकी, रंगीन सुतलियों के फन्दों का ऐसा काम, पहली बार देख रहा था। **(साभार)**

जनसंचार : विश्व रेडियो दिवस (13 फरवरी) पर विशेष

सजन रेडियो बजईओ–बजईओ जरा..'

• **संजीव शर्मा (समाचार संपादक, आकाशवाणी, भोपाल)**

हाल ही के वर्षों में रेडियो पर केंद्रित दो गाने खूब बजे। इनमें से एक शायद 2009 में आया था जिसमें मन का रेडियो बजाने की बात थी :

'मन का रेडियो बजने दे जरा

गम को भूल कर जी ले तू जरा

स्टेशन कोई नया ट्यून कर ले जरा

फुल्टू ऐटिटूड दे दे तू जरा..'

इसके बाद 2017 में सलमान खान की फिल्म 'ट्यूबलाइट' में सजन रेडियो ने धूम मचाई :

'सजन रेडियो बजईओ बजईओ

बजईके सभी को नचईओ जरा..'

कहा जाता है फिल्में समाज का आइना होती हैं। समाज में जो चल–दौड़ रहा होता है वह फिल्मों में भी दिखने लगता है। इसका मतलब रेडियो चल रहा है...दौड़ रहा है, तभी तो फिल्मों में रेडियो पर गाने लिखे जा रहे हैं। वाकई, रेडियो फिर अपनी पूरी रफ्तार से चल पड़ा है। बीच में कुछ वक्त ऐसा था जब बुद्धू बक्से की आंधी में रेडियो की रफ्तार धीमी पड़ गई थी लेकिन लोगों को जल्दी ही समझ आ गया कि टीवी–छोटे परदे का जन्म उनको बुद्धू बनाने के लिए हुआ है। इसलिए, गलती समझ आते ही लोग वापस रेडियो की राह पर लौटने लगे। इस दौरान, रेडियो ने भी रंग रूप बदले और अपने आपको मोबाइल में समेट लिया।

रेडियो कभी ट्रांजिस्टर बना तो कभी कारवां में बदला....कभी पॉडकास्ट बनकर छाया तो कभी कम्युनिटी रेडियो में, कभी मोबाइल में ऐप बनकर समाया, कभी कार में गूंजा तो कभी सुबह की सैर करने वालों की जेब में। रंग, रूप, आवाज और अंदाज बदलते हुए

रेडियो एक बार फिर हमारे आसपास सुरीली तान छेड़ने लगा है ।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने जब देशवासियों से अपने 'मन की बात' कहने सुनने का विचार किया तो उन्होंने रेडियो को ही चुना और हर माह के अंतिम रविवार को प्रसारित होने वाला यह कार्यक्रम सौ एपिसोड को भी पार कर गया है और इसकी लोकप्रियता लगातार बढ़ रही है।

रेडियो और प्रधानमंत्री के साथ ने रेडियो का तो पुनर्जन्म किया ही, खादी से लेकर स्थानीय उत्पादों तक की काया पलट कर रख दी...ये रेडियो की लोकप्रियता का ही कमाल है। प्रधानमंत्री की राह पर चलते हुए कुछ और प्रयोग हुए जैसे मध्य प्रदेश में पूर्व मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने 'दिल से' कार्यक्रम के जरिए रेडियो से राज्य के लोगों से संवाद किया। वहीं, अभी केंद्रीय मंत्री स्मृति ईरानी 'नई सोच नई कहानी' कार्यक्रम के माध्यम से इस सिलसिले को आगे बढ़ा रही हैं। रेडियो की साख और हैसियत को इस बात से भी समझा जा सकता है कि कई बड़े मीडिया समूह एफएम और पॉडकास्ट के जरिए रेडियो की दुनिया में कूद रहे हैं।

रेडियो का पर्याय आकाशवाणी तो है ही हरफनमौला, जो हर दौर में पूरी मुस्तैदी से डटा हुआ है और गीत, संगीत, समाचार, विचार जैसे विविध कार्यक्रमों के साथ सूचना,शिक्षा और मनोरंजन प्रदान करते हुए 'बहुजन हिताय बहुजन सुखाय' की कसौटी पर खरा उतर रहा है। विश्व रेडियो दिवस एक बार फिर रेडियो को एक सशक्त माध्यम के रूप में अपनाने की याद दिलाता है। इस बार विश्व रेडियो दिवस की थीम 'रेडियो : सूचना देने, मनोरंजन करने और शिक्षित करने वाली एक सदी' है।

आपदा से लेकर अवसर उपलब्ध कराने में रेडियो लगातार सक्रिय भूमिका निभाते आ रहा है। कोरोना संक्रमण के भयंकर दौर में हमने भी आपदा को अवसर में बदलकर रेडियो समाचारों को घर से प्रसारित कर और अच्छी खबर जैसी शुरुआत की थीं जिनको खूब सराहना मिली। ऐसे ही छोटे छोटे प्रयासों से रेडियो हमसे, समाज से संवाद करता है इसलिए फिलहाल तो मन का रेडियो बजाने का दौर है। वेलेंटाइन सप्ताह में बह रही प्रेम की हवा में आप भी सनम के साथ रेडियो पर प्यार लुटाइए और हमारे साथ गुनगुनाइए..'सजन रेडियो बजईओ–बजईओ जरा..।' **(फेसबुक वॉल से साभार)**

क्यों मनाया जाता है विश्व रेडियो दिवस?

स्पेन रेडियो एकेडमी ने 2010 में पहली बार इसका प्रस्ताव रखा था। 2011 में यूनेस्को की महासभा के 36वें सत्र में 13 फरवरी को विश्व रेडियो दिवस घोषित किया गया। 13 फरवरी को विश्व रेडियो दिवस के तौर पर यूनेस्को की घोषणा को संयुक्त राष्ट्र की महासभा ने 14 जनवरी, 2013 को मंजूरी दी। रेडियो सदियों पुराना माध्यम हो गया लेकिन अब भी संचार के लिए इसका इस्तेमाल होता है। इसके अलावा 1945 में इसी दिन यूनाइटेड नेशंस रेडियो से पहली बार प्रसारण हुआ था। रेडियो की इन अहमियतों को देखते हुए हर साल रेडियो दिवस मनाया जाता है। औपचारिक रूप से पहला विश्व रेडियो दिवस 2012 में मनाया गया।

कमाल की पेरेंटिंग टिप्स : पढ़ाई से जी नहीं चुरा पाएंगे बच्चे

बच्चे ज्यादातर पढ़ाई करने में आनाकानी करते हैं। ऐसे में जरूरी है कि माता–पिता (पेरेंट्स) उनके भविष्य के लिए पहले से ही तैयार रहें। इसके लिए हमने आर्टेमिस अस्पताल के मानसिक स्वास्थ्य और व्यवहार विज्ञान के प्रमुख मनोचिकित्सक व प्रमुख सलाहकार डॉ. राहुल चंडोक से बातचीत की है। उन्होंने बताया कि पढ़ाई से जी चुराने वाले बच्चों के लिए पेरेंट्स को कुछ महत्वपूर्ण बातें ध्यान रखने की जरूरत है। एक्स्पर्ट ने इसके लिए कई टिप्स भी बताए हैं, जिसे फॉलो करने के बाद आपके बच्चे खुद व खुद पढ़ने के लिए बैठने लगेंगे। तो चलिए जानते हैं बच्चों के लालन–पालन से जुड़ी कमाल की बातों (पेरेंटिंग टिप्स) के बारे में।

बच्चों के साथ बनाए रखें कम्युनिकेशन

बच्चों को समझाने और उन्हें कामयाब बनाने के लिए बेहद जरूरी है कि आप अपने बच्चों के साथ निरंतर संवाद (कम्युनिकेशन) बनाए रखें। ताकि, वह आपके साथ आराम और सुकून (कंफर्टेबल) महसूस करे। साथ ही, आपसे अपनी समस्याओं को साझा कर सके। इससे उनके अंदर आत्मविश्वास बढ़ेगा और पढ़ाई में भी उत्साह मिलेगा।

बच्चों के प्रश्नों का उत्तर दें

माता–पिता होने के नाते बेहद जरूरी है कि आप अपने बच्चों की पढ़ाई को विशेष महत्व दें। उन्हें हर कदम पर सहारा दें। बच्चे जब भी कोई सवाल करें, तो उनके प्रश्नों का उत्तर अवश्य दें। साथ ही, अगर उन्हें किसी टॉपिक में दिक्कत आ रही है, तो उनकी समस्याओं का हल भी जरूर निकालें। इससे बच्चे को भी महसूस होगा कि उनकी मेहनत को सम्मान दिया जाता है। इस तरह वे अपने अध्ययन में विश्वास रखेंगे और खुद से पढ़ने बैठ जाएंगे।

प्रोत्साहन में न करें कमी

बच्चे को आगे बढ़ाने के लिए बेहद जरूरी है कि आप उन्हें समय–समय पर प्रोत्साहित करते रहें। साथ ही, उन्हें स्वतंत्र महसूस करवाएं। उन्हें हर टाइम सिर्फ पढ़ाई करने के लिए न बोलें। समय–समय पर छुट्टी भी दीजिए। उन्हें संगठित रूप से पढ़ने की सलाह दें। साथ ही, उन्हें स्वतंत्रता भी दें कि वे अपने तरीके से सोच सके और पढ़ सके।

एक्स्पर्ट ने आखिर में यह भी सलाह दी कि बच्चों की पढ़ाई में दिलचस्पी जगाने के लिए जरूरी है कि आप उन्हें प्रेरित करें। साथ ही, उन्हें उनके लक्ष्यों के प्रति उत्साहित करें और हमेशा उनकी इच्छाशक्ति के लिए उन्हें बधाई दें। इन सभी पेरेंटिंग टिप्स का पालन करने से, बच्चे खुद से पढ़ने लगेंगे और उनकी पढ़ाई में भी रुचि बढ़ेगी। यह एक कमाल की प्रक्रिया है, जो बच्चों के उज्ज्वल भविष्य की ओर एक महत्वपूर्ण कदम है। अगर इसके बाद भी आपके बच्चे को पढाई मैं तकलीफ हो और उसके नंबर सही ना आ रहे हो तो किसी विशेषज्ञ से मिलकर सलाह लें। **(साभार - herzindagi.com)**

भारत के जेन–जी और मिलेनियल इतना तनाव में क्यों हैं?

- तनिका गोडबोले

भारत की युवा आबादी पुरानी पीढ़ियों के मुकाबले ज्यादा दबाव महसूस कर रही है. इसी पीढ़ी की एक लड़की डीडब्ल्यू से कहती है, 'हमने कभी ऐसी दुनिया नहीं देखी, जो संकट में नहीं थी.' शोधकर्ताओं के मुताबिक युवा भारतीयों में पिछली पीढ़ियों के मुकाबले एंग्जायटी होने की आशंका ज्यादा है.

मुंबई में रहने वाली थिएटर कलाकार मेघना एटी ने 'प्लान बी.सी.डी.ई.' नाम का इंटरैक्टिव शो बनाया है. शो में परफॉर्म करते हुए वह जलवायु को लेकर अपनी चिंताएं साझा करती हैं और अपने दर्शकों के साथ जलवायु परिवर्तन से निपटने के उपाय तलाशती हैं. 28 साल की मेघना डीडब्ल्यू को बताती हैं, 'मुझे अपने दर्शकों से पूछना पसंद है कि उन्होंने जलवायु परिवर्तन के बारे में सबसे पहले कब सुना. उम्रदराज लोग कहते हैं कि उन्होंने 40 या 50 की उम्र में सुना था. उनसे जवान लोग और मेरे जैसे लोग इस बारे में इतना सुनते आ रहे हैं कि याद भी नहीं है कि जिंदगी में कब हम जलवायु परिवर्तन के बारे में नहीं जानते थे. हमने कभी ऐसी दुनिया देखी ही नहीं, जो संकट में नहीं थी.' मेघना कहती हैं, 'जानकारी और खबरों तक हमारी ज्यादा पहुंच है. सूचित और सजग रहना जरूरी भी है, लेकिन कभी–कभी यह बहुत थकाऊ हो जाता है.'

भारत की सबसे बड़ी बीमा कंपनियों में से एक आईसीआईसीआई लोम्बार्ड की एक स्टडी में पता चला कि जेन–जी और मिलेनियल भारतीयों को पिछली पीढ़ियों के मुकाबले ज्यादा तनावग्रस्त और चिंताग्रस्त होने का खतरा है. स्टडी के मुताबिक करीब 77 फीसदी लोगों में तनाव का कम से कम एक लक्षण दिखा था. हर तीन में से एक भारतीय तनाव और घबराहट से जूझ रहा था, लेकिन अपेक्षाकृत युवाओं, खासकर जेन–जी (1994 से 2009 के बीच पैदा हुए लोग) के तनाव, घबराहट और क्रॉनिक बीमारियों से पीड़ित होने की आशंका ज्यादा प्रबल पाई गई.

प्रधानमंत्री मोदी की रेसिपी

भारतीय प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी इस संकट का मुकाबला करने के लिए तत्पर नजर आते हैं. 2018 से वह सालाना कार्यक्रमों के जरिए देशभर के विद्यार्थियों, उनके माता–पिता और शिक्षकों से बात करते हैं. उनके सवालों का जवाब देते हैं और विश्वविद्यालय प्रवेश परीक्षा या बोर्ड परीक्षा की तैयारी करने वाले छात्रों को सुझाव देते हैं कि कैसे वे रोजमर्रा की जिंदगी में तनाव कम कर सकते हैं. 2024 का कार्यक्रम नई दिल्ली में हुआ. इस दौरान पीएम मोदी ने आगाह किया कि 'दबाव इतना भी नहीं होना चाहिए कि वह आपकी क्षमताएं ही प्रभावित कर दे' और छात्रों को 'अपनी क्षमताओं को चरम सीमा तक नहीं खींचना चाहिए.' उन्होंने माता–पिता, परिजन और शिक्षकों से भी आग्रह किया कि विद्यार्थियों के प्रदर्शन पर 'रनिंग कमेंट्री' करने से बाज आएं, क्योंकि इससे 'नकारात्मक तुलनाएं' होने लगती हैं और ये विद्यार्थी की भलाई के लिए काफी निर्णायक साबित होता है. हालांकि, अकादमिक दबाव तो इस पहेली का सिर्फ एक सिरा है.

इतने तनाव की वजह क्या है?

सिर्फ अकादमिक दबाव ही इकलौती वजह नहीं है, जिसके चलते युवा इतना बोझ महसूस कर रहे हैं. नई दिल्ली से 24 साल के मोहित डीडब्ल्यू को बताते हैं कि उनके कई दोस्त शिक्षा की दुनिया से अपने करियर की शुरुआती अवस्थाओं तक के सफर को खासा मुश्किल मानते हैं. वह कहते हैं, 'कॉलेज की मेरी ज्यादातर पढ़ाई महामारी के दौरान हुई. चीजें जब सामान्य होने लगीं, तो मैं सहसा वर्किंग प्रोफेशनल बन चुका था. मुझे यह भी लगता है कि बहुत सारे कार्यस्थल टॉक्सिक हैं और उनका वर्क–लाइफ संतुलन काफी बुरा है. मेरी पीढ़ी इस चीज को स्वीकार करने को हरगिज तैयार नहीं है.'

इस भावना की झलक उस अध्ययन में भी दिखाई देती है, जिसमें कार्यस्थल पर सेहत में गिरावट के संकेत दिए गए हैं. खासकर महिलाओं और जेन–जी के कर्मचारियों के लिए. सर्वे के मुताबिक महामारी ने 'दफ्तरों को बुनियादी रूप से बदल डाला है और कर्मचारी बेहतर मानसिक तंदुरुस्ती की अपेक्षा करने लगे हैं.'

मानसिक स्वास्थ्य संगठन अमाहा में सीनियर क्लिनिकल मनोचिकित्सक प्रतिष्ठा त्रिवेदी मिर्जा ने डीडब्ल्यू से कहा, 'हड़बड़ी या भागमभाग की संस्कृति के साथ दबाव भी रहता ही है. युवा खुद को लगातार मुस्तैद रखने की जरूरत महसूस करते हैं. फिर यह पर्याप्त न कर पाने या जितना सोचा था, उतना हासिल न कर पाने की कुंठा या चिंता में तब्दील होता जाता है. इसके अलावा युवा अक्सर अपने साथियों या अपने आदर्शों, जैसे नामी शख्सियतों, इन्फ्लूएंसरों और इंडस्ट्री के प्रासंगिक लोगों से अपनी तुलना करते हुए अपना नकारात्मक मूल्यांकन करने लगते हैं. इस वजह से स्वाभिमान की भावना कम होने लगती है और आत्मसम्मान कमजोर पड़ने लगता है.

'बच्चे पैदा करके क्या होगा?'

क्रेया यूनिवर्सिटी में सेपियन लैब्स सेंटर फॉर द् ह्यूमन ब्रेन एंड माइंड की एक रिपोर्ट के मुताबिक आय के विभिन्न स्तरों में करीब 51 फीसदी भारतीय युवा (18–24 साल) जूझ रहे थे या तनावग्रस्त थे. ये रिपोर्ट उन प्रतिभागियों से मिली सूचना पर आधारित थी, जिन्हें अप्रैल 2020 से अगस्त 2023 के दरमियान इंटरनेट हासिल था. महामारी के बाद मानसिक स्वास्थ्य में गिरावट भी इसमें दिखाई गई. बेंगलुरु से 22 साल की छात्रा अनीशा ने डीडब्ल्यू को बताया, 'मेरी उम्र में मेरे माता–पिता की शादी हो गई थी और परिवार हो गया था. लेकिन मुझे नहीं लगता है कि मैं इस तरह के किसी वयस्क काम के लिए तैयार हूं. बच्चे पैदा करने की आखिर क्या तुक है? सब जगह से तो बुरी खबरें आ रही हैं. उम्मीद की कोई बात ही नहीं है.' वह कहती हैं, 'जब भी सोशल मीडिया देखती हूं, लगता है हर कोई मुझसे ज्यादा अच्छी जिंदगी बिता रहा है. लेकिन आप सोशल मीडिया को वास्तव में अनदेखा कर भी नहीं सकते.' मनोचिकित्सक मिर्जा कहती हैं कि दुनियाभर में चल रहे सामाजिक टकराव और युद्ध भी इस नए उपजे हालात का एक हिस्सा हैं.

'जेन–जी और मिलेनियल्स सोशल मीडिया के जरिए दुनिया से ज्यादा जुड़े हैं. एक तरह के विशेषाधिकार की ग्लानि भी रहती है, जब युवा महसूस करते हैं कि उनके पास कुछ अवसर और संसाधन हैं, जो दूसरों को उपलब्ध नहीं हैं. तमाम वैश्विक हालात भी. अलग–अलग देशों में युद्ध और दूसरे सामाजिक–राजनीतिक संघर्ष और अनिश्चितताएं, जो ये मुद्दे लेकर आते हैं. इस नौजवान पीढ़ी में तनाव को बढ़ा रही हैं.'

बहुत से लोग मदद पाने के इच्छुक

मानसिक स्वास्थ्य और तंदरुस्ती को लेकर भारतीय जागरूक होने लगे हैं. लिव लाफ लव फाउंडेशन के 2021 के एक सर्वे के मुताबिक 92 फीसदी प्रतिभागी अपने लिए या किसी परिचित के लिए उपचार पाने के इच्छुक थे. 2018 में ऐसे लोगों की संख्या 54 फीसदी थी. अध्ययन में सिर्फ महानगर ही शामिल थे, लेकिन इसमें दिखा कि आम जागरूकता बढ़ी है, खासकर नौजवान पीढ़ी में. मिर्जा कहती हैं कि हालांकि, इस जागरूकता का युवा भारतीयों के बीच बेहतर मानसिक स्वास्थ्य के रूप में परिणीत होना बाकी है. युवा लोग मानसिक सेहत से जुड़ी चिंताओं को पहचानने में ज्यादा सक्षम हैं, लेकिन वे इस बारे में सचेत नहीं होंगे कि इस बारे में करना क्या है. इसके अलावा सामाजिक शर्म और आत्म–संकोच मौके पर मदद मांगने के आड़े आती है.

उनका कहना है कि विश्वसनीय संसाधन हर किसी को उपलब्ध भी नहीं हैं. मिर्जा कहती हैं कि बात यह भी है कि बहुत सारी व्यापक सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक और आर्थिक चुनौतियों पर जेन–जी का नियंत्रण नहीं है, जिससे उनके तनाव में और बढ़ोतरी होती है. उनके मुताबिक, 'मानसिक स्वास्थ्य के बारे में सजगता बढ़ी है और कोविड महामारी के बाद मानसिक बीमारियों के सिलसिले में मदद पाने को लेकर शर्म–संकोच की भावना भी घटी है. लेकिन, इस पर अभी बहुत काम बाकी है.'

(जर्मनी की अंतरराष्ट्रीय प्रसारण संस्था डीडब्ल्यू वर्ल्ड से साभार)

आपदाओं से मुकाबले के लिए समुदाय का सशक्त होना जरूरी

• **अशोक कुमार शर्मा (वरीय सलाहकार, बिहार राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण)**

माननीय मुख्यमंत्री, बिहार सह अध्यक्ष, बिहार राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण श्री नीतीश कुमार का स्पष्ट मंतव्य है कि आपदाओं का मुकाबला करने के लिए समुदाय को सशक्त करना अति आवश्यक है। आपदाओं के प्रति समाज के हर वर्ग के लोगों को ज्यादा से ज्यादा जागरूक करने और सतर्क बनाने पर सदैव उनका जोर रहता है। बिहार राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण उनके इस सोच को धरातल पर उतारने का कार्य बखूबी अंजाम दे रहा है। प्रस्तुत लेख में आपदा जोखिम न्यूनीकरण एवं प्रबंधन हेतु समुदाय आधारित क्षमता निर्माण की विवेचना की गई है।

दरअसल, आपदाएं वो स्थितियां हैं, जिनमें स्थानीय जनसंख्या के सामर्थ्य तथा क्षमताओं की लामबंदी की जरूरत है। ज्ञात है कि स्थानीय समुदायों को आपदाओं के पहले एवं पश्चात् सक्रिय भूमिका निभानी पड़ती है, क्योंकि :

- आपदा के घटित होने से पहले अच्छी तैयारी उसके प्रभाव को कम कर सकती है।
- आपदा घटित होने से कहीं और से मदद आने से अधिक संख्या में अनमोल जीवन को बचाया जा सकता है।
- आपदा के फलस्वरूप होने वाली उत्तरजीविता और स्वास्थ्य की अनेक समस्याओं को अधिक प्रभावी रूप से सुलझाया जा सकता है, यदि समुदाय सक्रिय और सुसंगठित हो।

समुदाय तथा संवेदनशीलता (Community and Vulnerability)

समुदाय शब्द को एक जटिल शब्द माना जाता है जिसकी एक समरूप स्वीकार्यता होने की जरूरत है। सामान्य शब्दों में, इसमें निहितार्थ लोगों का ऐसा समूह है जिसके समान विचार, संसाधन, परिवेश, अपेक्षाएँ आदि होते हैं। आपदा तैयारी के दृष्टिकोण से इसमें निम्नलिखित में से कुछ अथवा सभी होते हैं : एक प्रादेशिक (Territorial Area) क्षेत्र के भीतर संगठनों का समूह तथा सबसे अधिक एक 'अपनेपन' की भावना। फिर भी, समुदाय की सबसे तर्कसंगत परिभाषा विश्व स्वास्थ्य संगठन द्वारा प्रदान की गई है जिसमें समुदाय को 'एक

आमने–सामने संपर्क वाले समूह के रूप में परिभाषित किया गया है, जिसमें हितों तथा महत्वाकांक्षाओं का सामंजस्य होता है तथा जो समान मूल्यों तथा उद्देश्यों से संबद्ध रहता है'।

प्रश्न यह है कि आपदाओं के मामले में कौन सबसे अधिक संवेदनशील होता है, आर्थिक संदर्भ में कोई स्पष्ट उत्तर नहीं है। यह आवश्यक नहीं कि सभी गरीब आपदाओं में समान रूप से प्रभावित हों अथवा किसी क्षेत्र में रहने वाले सभी लोग समान स्तर पर आपदा जोखिम को झेलें। लेकिन, सामान्य रूप से यह लोगों के हितों से वंचित अथवा हाशिए पर स्थित समुदाय अथवा समूह हैं जो आपदाओं से सबसे अधिक प्रभावित होते हैं। इनके पास आपदाओं के प्रभाव से उबरने के लिए सबसे कम संसाधन तथा क्षमताएं होती हैं तथा ये अनेक खतरों के लिए संवेदनशील बन जाते हैं। इसके कुछ कारण हो सकते हैं:

- संसाधनों तक पहुंच की कमी (पदार्थ/आर्थिक संवेदनशीलता)
- सामाजिक पैटर्नों और प्रतिमानों का विघटन (सामाजिक संवेदनशीलता)
- पर्यावरण का निम्नीकरण तथा उसे सुरक्षित रखने की असमर्थता (पारिस्थितिक संवेदनशीलता)
- सुदृढ़ राष्ट्रीय तथा स्थानीय संस्थागत संरचनाओं की कमी (संगठनात्मक संवेदनशीलता)
- सूचना तथा ज्ञान तक पहुंच की कमी (शैक्षिक संवेदनशीलता)
- जन जागरूकता की कमी (सोच तथा प्रेरणा संबंधी संवेदनशीलता)
- राजनीतिक शक्ति तथा प्रदर्शन तक सीमित पहुंच (राजनीतिक संवेदनशीलता)
- कुछ मान्यताएं तथा रीतियां (सांस्कृतिक संवेदनशीलता)
- कमजोर इमारतें अथवा कमजोर व्यक्ति (भौतिक संवेदनशीलता) (आइसन, 1993)।

अधिकतर ग्रामीण क्षेत्रों के परिवार ही हैं जो बाढ़, भूकंप, अतिवृष्टि, ओलावृष्टि, चक्रवाती तूफान, वज्रपात, आदि जैसी कठिनाइयों के लिए प्रत्यक्ष रूप से संवेदनशील होते हैं। हमारा दृष्टिकोण शुरू से यह रहा है कि आपदा के घटित होने पर राहत के लिए धन/अनुदान के लिए मांग करने की बजाय समुदायों की क्षमताओं को सुदृढ़ करने का विकल्प ज्यादा सटीक और प्रभावी है। परिवार स्तर पर, ग्रामीण निर्वहन अर्थव्यवस्था में संभावित आपदा घटना के लिए तैयारी करने को एक अवहनीय विलासिता माना जाता है (ओकली, 1993)।

प्रशिक्षण का महत्वः

प्रशिक्षण का उद्देश्य ज्ञान, कौशल तथा सोच को बेहतर बनाना है। आपदाओं के प्रबंधन के संदर्भ में, प्रशिक्षण का बहुत ही महत्वपूर्ण स्थान है, क्योंकि यह विभिन्न श्रेणियों के कर्मियों को आवश्यक ज्ञान तथा कौशल प्रदान करता है। यह विपत्ति का प्रबंधन करने वाले व्यक्तियों के प्रदर्शन को सुधारता है। यह उन्हें स्थितियों के अनुसार ज्ञान और कौशलों का उपयोग करने में समर्थ बनाता है। प्रशिक्षण व्यक्तियों, संगठनों तथा समुदायों की क्षमताओं को विकसित एवं सुदृढ़ करने में सहयोग करता है। प्रभावी प्रशिक्षण के लिए संस्थागत सहायता का होना आवश्यक है। सूचना, शिक्षा, संचार तथा प्रशिक्षण की गतिविधियां उचित आवश्यकता विश्लेषणों पर आधारित होनी चाहिए। इसे पूर्णतावादी होना चाहिए क्योंकि आपदा प्रबंधन गतिविधियों में अनेक प्रकार के कर्मी सम्मिलित होते हैं। इनमें नीति निर्धारक, सरकारी अधिकारी, विशेषज्ञ, तकनीकी विशेषज्ञ, युवा, गैर–सरकारी संगठन, समुदाय–आधारित संगठन, समुदाय आदि सम्मिलित हैं। इन कार्मिकों की प्रशिक्षण आवश्यकाताएं भिन्न होती हैं। उन्हीं के अनुसार, सूचना, शिक्षा, संचार तथा प्रशिक्षण कार्यक्रमों को विकसित किया जाता है।

समुदाय को प्रशिक्षण की आवश्यकताः

बिहार, देश के सर्वाधिक आपदा प्रभावित राज्यों में से एक है। बाढ़, सूखा, भूकंप, ओलावृष्टि, चक्रवाती तूफान, नाव दुर्घटना, वज्रपात, डूबने की घटनाएं, अगलगी, शीतलहर, लू, सड़क दुर्घटना, असमय भारी वर्षा आदि

आपदाओं से यह राज्य समय–समय पर प्रभावित होता रहा है। प्राकृतिक आपदाओं में बाढ़ सबसे ज्यादा आम और हर साल आने वाली आपदा है जिससे जान–माल की अपार क्षति होती है। यह सर्वविदित है कि किसी भी आपदा के घटित होने पर समुदाय ही प्रथम रिस्पांडर होता है। अतएव आपदाओं की जोखिम की पहचान एवं न्यूनीकरण तथा प्रबंधन में समुदाय महती भूमिका है। समुदाय की इस महती भूमिका के निर्वहन हेतु जागरुक एवं सक्षम बनाने का कार्य पंचायत प्रतिनिधियों के माध्यम से बेहतर तरीके से हो सकता है। इसी पृष्ठभूमि में बिहार राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण ने मुखिया एवं सरपंच सहित सभी पंचायत प्रतिनिधियों (पंच, वार्ड सदस्य, पंचायत समिति के सदस्य एवं जिला परिषद् के सदस्य) के बहु–आपदा जोखिम न्यूनीकरण एवं प्रबंधन विषय पर प्रशिक्षण कराया गया। चूँकि त्रिस्तरीय पंचायती राज व्यवस्था में जनता द्वारा चुने गये पंचायत प्रतिनिधियों की समुदाय के बीच नेतृत्वकारी भूमिका होती है।

पंचायत प्रतिनिधियों के प्रशिक्षण का उद्देश्य :–

आपदा की प्रकृति स्थानीय होती है और इसके रिस्पांस हेतु समुदाय की सहभागिता अत्यन्त महत्वपूर्ण है। पंचायत प्रतिनिधि स्थानीय समुदाय के द्वारा ही निर्वाचित होते हैं और उनका स्थानीय समुदाय पर सीधा प्रभाव होता है। दैनंदिन कार्यों के लिए समुदाय अपने पंचायत प्रतिनिधियों के संपर्क में आते हैं एवं उनके साथ संवाद सीधा और सुगम होता है। अतः पंचायत प्रतिनिधियों की आपदा प्रबंधन के क्षेत्र में जागरूकता एवं क्षमतावृद्वि से स्थानीय समुदाय पर इसका सीधा प्रभाव पड़ेगा, जिससे आपदा रिस्पांस (बचाव एव राहत) के कार्य प्रभावी तरीके से संपादित किए जा सकेंगे।

आपदा से प्रभावित होने वाले समुदाय की संवेदनशीलता (Vulnerability) के विश्लेषण एवं उसके न्यूनीकरण के लिए आमजन एवं पंचायत प्रतिनिधियों का जागरूक होना आवश्यक है। आपदाओं के प्रति पंचायत प्रतिनिधियों के जागरूक होने से स्थानीय समुदाय अपने स्थानीय प्रकृति के आपदाओं के विश्लेषण तथा उसके न्यूनीकरण, बचाव एवं रिस्पांस की योजनाएं सटीक रूप से तैयार कर सकता है।

गंगा में नौका डूबी, प्राधिकरण के प्रशिक्षित तैराकों ने बचाई जानें

सुरक्षित तैराकी कार्यक्रम बिहार राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण का एक महत्वाकांक्षी कार्यक्रम है। इसका उद्देश्य डूबने से होनेवाली मौतों को रोकना है। इसके अंतर्गत प्राधिकरण द्वारा गायघाट, पटना स्थित राष्ट्रीय अंतर्देशीय नौवहन संस्थान (निनि) के सहयोग से राज्य के चिन्हित युवाओं को तैराकी के मास्टर ट्रेनर्स का 12 दिवसीय आवासीय प्रशिक्षण दिया जाता है। इसके बाद ये युवा जिला प्रशासन के सहयोग से सामुदायिक स्तर पर किशोरों को तैराकी का प्रशिक्षण देते हैं। उपरोक्त मास्टर ट्रेनस प्रशिक्षण कार्यक्रम के 18वें बैच में मुंगेर जिले के श्री सुप्रशांत, श्री सौरभ एवं श्री विशाल ने भी मास्टर ट्रेनर्स प्रशिक्षण प्राप्त किया था।

दैनिक भास्कर **मुंगेर 05-01-2024**

बड़ा हादसा टला • लापरवाही से जिले में समय-समय पर हो रहे नाव हादसे, 200 से अधिक नाव का परिचालन, मात्र 96 ही रजिस्टर्ड

दियारा से सब्जी लेकर आ रहे किसानों की नाव चट्टान से टकराकर गंगा में डूबी, सभी 11 लोग बाल-बाल बचे

भास्कर न्यूज | मुंगेर

मुफस्सिल थाना क्षेत्र में गुरुवार को गंगा में घने कोहरे के बीच नाव हादसा हो गया। घटना में किसी के हताहत होने की सूचना नहीं है, क्योंकि घटना के वक्त समय रहते घाट किनारे उपस्थित गोताखोरों के प्रयास से नाव पर सवार सभी लोगों को सुरक्षित रेस्क्यू कर लिया गया। नाव पर लदी सब्जी की बोरियों को भी निकाल लिया गया। जिस नाव का हादसा हुआ, उस पर 11 लोग सवार थे। वहीं घटना के एक घंटे बाद नाविक अपने नाव को पानी से निकालकर नाव लेकर भागने में सफल रहा। जिस नाव का हादसा हुआ वह सीताचरण गांव के इंद्र बिंद की है। उसका निबंधन भी नहीं था यानी नाव अवैध थी।

रेस्क्यू करने वाले गोताखोर शुप्रशांत कुमार, सौरभ कुमार और विशाल कुमार ने बताया कि जिस नाव से हादसा हुआ, वह नाव गंगा के पश्चिमी छोड़ सीताचरण दियारा क्षेत्र से सब्जी की बोरियां लादकर इस पार बबुआ घाट आ रही थी। सुबह-सुबह घना कोहरा रहने के कारण नाविक को घाट का पता नहीं चला और वह रास्ता भटक कर बबुआ घाट से सटे कष्टहरणी घाट के समीप पहुंच गया। घाट पर पहाड़ का चट्टान निकला हुआ है, जिससे घाट से लगभग 20 फीट दूर गंगा के पानी में एक बड़े चट्टान से नाव टकरा गई। गोताखोर ने बताया कि गंगा में नाव की स्पीड काफी तेज थी और उसे कोहरा के कारण घाट के किनारे का पता नहीं चला और अचानक वह पत्थर में टकरा गई, जिस कारण नाव का एक भाग पत्थर से टकराकर ऊपर चढ़ गया और दूसरा भाग गंगा में डूब गया।

कष्टहरणी घाट पर हुआ हादसा, चाय पी रहे गोताखोरों ने मछुआरे की मदद से बचाई सभी की जान

शहर के कष्टहरणी गंगा घाट पर गंगा नदी में कोहरे के बीच दुर्घटनाग्रस्त नाव पर लदी सब्जी की बोरियां।

बचाओ-बचाओ का शोर सुनकर सभी लोग दौड़े पहुंचे

गोताखोर ने बताया कि जब नाव पत्थर से टकरा गई और डूबने लगी तो सवार लोग घबरा गए और अफरा-तफरी की स्थिति बन गई। तभी अचानक बचाने की आवाज आने लगी। गोताखोर शुप्रशांत ने बताया कि वह अपने दो साथियों के साथ ई-रिक्शा चलाकर कष्टहरणी घाट गए हुए थे। घाट के ऊपरी क्षेत्र में वे लोग खड़े होकर चाय पी रहे थे, तभी उन्हें आवाज सुनाई पड़ी और वे लोग एक मछुआरे को दौड़कर बुलाने गए और उसे अपने साथ लेकर अपने अन्य साथियों के साथ जाकर गंगा में डूब रहे सभी लोगों को रेस्क्यू कर बचा लिया। नाव पर सवार सब्जी की बोरी को भी निकाल लिया गया। यदि समय पर उनलोगों के द्वारा सहायता नहीं की जाती तो बड़ा हादसा संभव था।

जिस नाव का हादसा, उसका नहीं था लाइसेंस

सदर अनुमंडल क्षेत्र में लगभग 200 से अधिक नाव चल रही है। जिसमें अवैध बालू ढोने वाली नाव, मछली मारने वाली नाव के अलावा आमलोगों को बिठाकर गंगा में नाव का परिचालन किया जा रहा है। हेरूदियारा के पास से नाव पर बालू ढुलाई होती है। बेलवा घाट, लल्लू पोखर, कंकड़ घाट, सीढ़ी घाट और कष्टहरणी घाट के समीप मौजूद नाव के सहारे मछुआरा के द्वारा मछली मारी जाती है। अधिकांश नाव का निबंधन नहीं है। इसके अलावा बबुआ घाट, मय तौफिर घाट, सीताकुंड डीह घाट, मनियारचक, महेशपुर, कल्याण टोला और फुलकिया घाट के समीप से लोगों को नाव पर बिठाकर आवागमन किया जाता है। प्रशासनिक अधिकारी के मुताबिक अभी तक मात्र 96 नाव का ही निबंधन हुआ है। बांकी के सभी नाव बिना निबंधन के परिचालित हो रहे हैं।

पहले भी कई बार हो चुका है नाव हादसा

नाविकों की मनमानी के कारण पहले भी बड़े हादसे हो चुके हैं। घने कोहरे और तेज हवा के बीच भी बिना सुरक्षा के नाव का परिचालन हो रहा है। इतना ही नहीं यहां तो रात के वक्त भी नौका का परिचालन होते अक्सर पाया जाता है। किसी भी नाव पर सुरक्षा के लिए जरूरी किट उपलब्ध नहीं रहता है। जिससे आए दिन नाविक के मनमानी किए जाने से इस तरह की घटना होती रहती है। बीते वर्ष 23 अक्टूबर की देर शाम तौफिर दियारा से लौटने के क्रम में 100 यात्रियों से भरी नाव बीच गंगा में फट जाने से कई लोग गंगा में डूब गए थे, जिसे समय रहते दूसरे नाव से बचाया गया था।

विगत चार जनवरी, 2024 की सुबह मुंगेर में गंगा नदी में एक बड़ा हादसा होने से टल गया। दर्जनों लोग गंगा में समाने से बाल बाल बचे। दरअसल, सीताचरण दियारा से सब्जी लाद कर मुंगेर के कष्टहरणी घाट एक नाव आ रहा था। इस नाव पर आधा दर्जन से अधिक महिला पुरुष और बच्चे सवार थे। घने कोहरे की वजह से अचानक घाट के करीब गंगा में निकली चट्टान से नाव टकरा डूबने लगी। इससे मौके पर हड़कंप मच गया। नाव पर सवार बच्चे और अन्य लोग चिल्लाने लगे जिनकी चीख–पुकार सुन घाट पर मौजूद स्थानीय गोताखोर सुप्रशांत, विशाल और सौरभ ने गंगा में अपनी नाव उतार दी। कुछ अन्य नाविकों की मदद से सभी को सकुशल घाट किनारे तक पहुंचाया गया। सुप्रशांत, विशाल और सौरभ के साहसिक कार्य की सभी ने सराहना की। इन तीनों प्रशिक्षित तैराकों ने एक वीडियो जारी कर बिहार राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण का विशेष रूप से आभार जताया, जिनके प्रशिक्षण की बदौलत वे इतने लोगों की जान बचा सके।

आगे बढ़ने का सबसे बड़ा हथियार शिक्षा : अशोक चौधरी

– बिहार रुकनेवाला नहीं, माननीय श्री नीतीश कुमार ने विकास की खींच दी है लंबी लकीर

– बिहार राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण के 'इनसे मिलिए' कार्यक्रम में राज्य के माननीय भवन निर्माण मंत्री ने रखी अपनी बात

'आगे बढ़ने के लिए शिक्षा सबसे बड़ा हथियार है। कोई भी देश या समाज बगैर अच्छी शिक्षा के तरक्की हासिल नहीं कर सकता।' राज्य के भवन निर्माण मंत्री माननीय श्री अशोक चौधरी ने उक्त बातें 18 जनवरी को सरदार पटेल भवन स्थित बिहार राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण के सभाकक्ष में आयोजित 'इनसे मिलिए' कार्यक्रम में कही। इस अवसर पर शिक्षाविद् और पटना स्थित ज्ञान निकेतन गर्ल्स स्कूल की संचालिका सुश्री शांभवी ने भी बड़े सधे हुए शब्दों में अपनी बात रखी। प्राधिकरण के माननीय उपाध्यक्ष डॉ उदय कांत, माननीय सदस्य श्री पारस नाथ राय, माननीय सदस्य श्री मनीष कुमार वर्मा, माननीय सदस्य श्री कौशल किशोर मिश्र और सचिव श्री मीनेंद्र कुमार (भा.प्र.से.) ने करतल ध्वनि के बीच माननीय मंत्री का आत्मीय स्वागत किया। माननीय उपाध्यक्ष और माननीय सदस्यों ने माननीय मुख्य अतिथि को प्राधिकरण की विभिन्न गतिविधियों से अवगत कराया। प्राधिकरण की ओर से आपदा प्रबंधन के क्षेत्र में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस जैसी नई तकनीक के प्रयोग की जानकारी उन्हें दी गई। एआर–वीआर तकनीक के जरिए आपदा जागरूकता संदेशों के प्रसार और आपदा पूर्व चेतावनी हेतु आईआईटी पटना द्वारा विकसित किए जा रहे उन्नत इलेक्ट्रॉनिक डिवाइस के बारे में माननीय मंत्री को बताया गया। प्राधिकरण के सभी कर्मचारी, पदाधिकारी और प्रोफेशनल्स इस कार्यक्रम में मौजूद रहे।

अपने संबोधन में श्री चौधरी ने कहा कि मुझे यहां आप लोगों ने बुलाया, यह मेरे लिए सौभाग्य की बात है। समाज में अमूमन राजनेताओं को कोई सुनना नहीं चाहता। नेता है, तो खराब ही है, यह आमफहम धारणा हिंदी फिल्मों से बनी है जबकि समाज में और हर पेशे में अच्छे लोग भी हैं, बुरे लोग भी हैं। राज्य के माननीय

मुख्यमंत्री सह प्राधिकरण के माननीय अध्यक्ष श्री नीतीश कुमार के विजनरी नेतृत्व का जिक्र करते हुए श्री चौधरी ने कहा कि विकास ने किस तेजी से रफ्तार पकड़ी है, इसका अंदाजा इस बात से लगाया जा सकता है कि आज बिहार का वार्षिक बजट 2,66,000 करोड़ रुपए से अधिक का हो चुका है। गरीबों, दलितों, पिछड़ों के बच्चों को उन्होंने मुख्यधारा से जोड़ा। बिहार देश का इकलौता राज्य है, जहां 10 रुपये में इंजीनियरिंग की पढ़ाई बच्चे कर रहे हैं। 21वीं सदी के बेहतर बिहार की परिकल्पना और सपने को साकार करने के लिए हमारे नेता दिन–रात काम कर रहे हैं। सात निश्चय पार्ट–1 और पार्ट–2 की विस्तृत चर्चा करते हुए उन्होंने कहा कि माननीय नीतीश कुमार ने बिहार में विकास की एक लंबी लकीर खींच दी है। बिहार अब रुकने वाला नहीं है। बिहार दौड़ चला है।

अपने पिता और कांग्रेस के कद्दावर नेता रहे नौ बार के विधायक, पूर्व मंत्री स्व. महावीर चौधरी का स्मरण करते हुए उन्होंने बताया कि वह शिक्षा पर बहुत जोर देते थे। हमारे परिवार में सभी भाई ऊंचे ओहदे पर हैं और यह सब उच्च शिक्षा और अच्छी शिक्षा की बदौलत ही हुआ है। माननीय मंत्री ने खुद भी पटना विश्वविद्यालय से राजनीति विज्ञान में स्नातकोत्तर की डिग्री के साथ–साथ पीएचडी की उपाधि हासिल कर रखी है। श्री चौधरी ने बच्चों की शिक्षा को सर्वोच्च प्राथमिकता देने का अनुरोध किया। कहा कि अपने बच्चों के लिए तमाम व्यस्तताओं के बावजूद समय निकालिए। अपने राजनीतिक जीवन की चर्चा करते हुए श्री चौधरी ने कहा कि मेरे पिताजी नहीं चाहते थे कि उनका कोई लड़का राजनीति में आए। लेकिन मैं दसवीं कक्षा के बाद से ही राजनीति में आने का सपना देखने लगा था। पिताजी की नजरों में पढ़ाई में सबसे कमजोर मैं ही था। ऐसे में उनकी राजनीतिक विरासत संभालने का मौका मुझे ही मिला। वर्ष 2000 में पहली बार मैंने चुनाव लड़ा और जीत हासिल की। बिहार सरकार में मंत्री भी बना।

श्री चौधरी ने कहा कि अगर आप ईमानदारी, सत्य और निष्ठा के साथ किसी कार्य में लगते हैं, तो आपको कोई डिगा नहीं सकता। आपकी कभी पराजय नहीं हो सकती। वर्ष–2000 के शुरुआती वर्षों में मेरे राजनीतिक विरोधियों ने मुझे हर तरह से घेरने की कोशिश की। मुझ पर हत्या जैसे गंभीर अपराध के झूठे मुकदमे दर्ज कराए गए। अंततः सत्य की जीत हुई और मैं इस दुष्चक्र से बाहर निकल पाया।

आपदा प्रबंधन के क्षेत्र में बिहार में किए जा रहे कार्यों के लिए प्राधिकरण के प्रयासों की सराहना करते हुए श्री चौधरी ने कहा कि प्राधिकरण आज जिस ऊंचाई पर है, यह भी माननीय श्री नीतीश कुमार जी की ही देन है। आपदा प्रबंधन की अवधारणा ही श्री नीतीश कुमार पहली बार देश में लेकर आए। आपदा पूर्व चेतावनी के लिए आईआईटी, पटना के सहयोग से प्राधिकरण द्वारा विकसित किए जा रहे इलेक्ट्रॉनिक डिवाइस की उन्होंने भूरि–भूरि प्रशंसा की।

सेहत : हर 10 में एक व्यक्ति कैंसर का रोगी

प्रख्यात कैंसर रोग विशेषज्ञ पद्मश्री डॉ. जितेंद्र ने स्वस्थ रहने के बताए गुर

पटना के जाने–माने कैंसर रोग विशेषज्ञ पद्मश्री से सम्मानित प्रख्यात चिकित्सक डॉक्टर जितेंद्र कुमार सिंह 27 फरवरी को सरदार पटेल भवन स्थित प्राधिकरण कार्यालय पहुंचे। 'इनसे मिलिए' कार्यक्रम में प्राधिकरण के पदाधिकारियों, कर्मियों और प्रोफेशनल्स को संबोधित किया। अपने संबोधन में डॉ. सिंह ने प्राधिकरण कर्मियों को स्वस्थ रहने के गुर बताए। उन्होंने कहा कि आने वाले समय में देश में हेल्थ सेक्टर सबसे बड़ी चुनौती के रूप में सामने होगा। आज की तारीख में 10 में से एक व्यक्ति कैंसर का रोगी है। हर 40 सेकंड पर कैंसर की वजह से एक व्यक्ति की मृत्यु हो जाती है। देश में प्रतिवर्ष 38 लाख लोग कैंसर से पीड़ित होते हैं। डॉ. सिंह ने कहा कि कैंसर के साथ सबसे ज्यादा दिक्कत यह है कि इस रोग के लक्षण या इससे होनेवाली तकलीफें बिल्कुल एडवांस स्थिति में ही सामने आती हैं। तब तक काफी देर हो चुकी होती है। कैंसर के इलाज में समय का महत्व सबसे ज्यादा है। 88 प्रतिशत रोगी कैंसर की अंतिम अवस्था (एडवांस स्टेज) में ही डॉक्टर के पास पहुंच पाते हैं। इस रोग से मृत्यु दर अधिक होने की सबसे बड़ी वजह भी यही है।

डॉ. सिंह ने कहा कि हमारे देश में स्तन कैंसर के मामले सबसे ज्यादा आते हैं। महिलाओं में जागरूकता की कमी इसका सबसे प्रमुख कारण है। इसके बाद मुंह का कैंसर है, जिसकी सबसे बड़ी वजह तंबाकू का सेवन है। बीड़ी, सिगरेट, गुटखा कैंसर बांट रहे हैं। आपको जानकर आश्चर्य होगा कि देश में 300 करोड रुपए का व्यापार गुटखे का होता है। उन्होंने कहा कि कैंसर की रोकथाम के लिए जागरूकता सबसे जरूरी है। हेल्थ एजुकेशन, मेडिटेशन, योगासन, साफ पानी का सेवन, हेल्दी फूड, स्वच्छ पर्यावरण, सफाई ये सब चीजें जरूरी है। इन सब की बदौलत ही कैंसर के मामले कम किए जा सकते हैं। कैंसर रोग के बारे में बच्चों को पाठ्यक्रम में पढ़ाया जाना चाहिए। नई तकनीक की चर्चा करते हुए डॉ. सिंह ने कहा कि कैंसर के इलाज में कृत्रिम बुद्धिमत्ता (आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस) भी मददगार हो सकता है। इस दिशा में हमारे देश में ही नहीं, पूरे विश्व में तेजी से काम हो रहा है। इस जानलेवा रोग से बचने के उपायों के बारे में बताते हुए उन्होंने कहा कि हर आदमी को साल में एक बार अपने पूरे शरीर का हेल्थ चेकअप कराना चाहिए। साथ ही कुछ सामान्य लक्षण हैं, जिन पर खास ध्यान देना चाहिए। मसलन, शरीर में कोई भी गांठ लंबे समय से ठीक नहीं हो रही हो। मुंह, पेशाब या मल के रास्ते से खून आए तो यह बात गंभीर है। लगातार खांसी हो रही हो। मुंह के अंदर सफेद रंग के धब्बे नजर आते हों। शरीर पर तिल या मस्सा अपना रंग और आकार बदल रहा हो तो तुरंत सचेत हो जाएं। ये सारे लक्षण अगर दिखें तो फौरन किसी अच्छे चिकित्सक से दिखाएं। अपना इलाज कराएं।

एसएस हॉस्पिटल एंड रिसर्च सेंटर, कंकड़बाग, पटना के निदेशक डॉ. जितेंद्र कुमार सिंह कैंसर रोग की चिकित्सा और अनुसंधान के क्षेत्र में विख्यात नाम हैं। डॉ जितेंद्र कुमार सिंह का जन्म बांका जिले के मंझौनी गांव में एक स्वतंत्रता सेनानी के परिवार में हुआ। वर्ष 1975 में पटना मेडिकल कॉलेज से एमबीबीएस की डिग्री हासिल की। पीएमसीएच में वर्षों सेवा देने के उपरांत महावीर कैंसर संस्थान के निदेशक रहे। वर्ष 2012 में आपको पदमश्री से नवाज गया।

साइन लैंग्वेज वर्कशॉप : सीखी मूक–बधिरों के संवाद की भाषा

दिव्यांगजन आपदा जोखिम न्यूनीकरण एवं क्षमतावर्द्धन कार्यक्रम बिहार राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण का एक महत्वाकांक्षी कार्यक्रम है। इसका मकसद दिव्यांगजनों को आपदाओं में सुरक्षित रखना है। दिव्यांगजनों की दिक्कतों को भलीभांति समझने एवं उनके प्रति और ज्यादा संवेदनशील आचरण व व्यवहार अपनाने के उद्देश्य से प्राधिकरणकर्मियों के बीच साइन लैंग्वेज (मूक–बधिर की भाषा) वर्कशॉप का आयोजन किया गया। सप्ताहव्यापी इस वर्कशॉप में प्राधिकरणकर्मियों को इंडियन साइन लैंग्वेज की बेसिक जानकारी दी गई।

डेफ वूमेन फाउंडेशन ऑफ बिहार के सहयोग से यह प्रशिक्षण कार्यक्रम 12 फरवरी से 16 फरवरी के बीच आयोजित किया गया। साइन लैंग्वेज एक्सपर्ट के रूप में श्री जितेंद्र कुमार और सुश्री मोनिका सिंह मौजूद रहे। वर्कशॉप में प्राधिकरण के माननीय उपाध्यक्ष डॉ उदय कांत, माननीय सदस्य श्री पी. एन. राय और माननीय सदस्य श्री कौशल किशोर मिश्र की भी गरिमामयी उपस्थिति रही। समस्त प्रतिभागियों को फाउंडेशन की ओर से सर्टिफिकेट प्रदान किए गए।

आपदाओं से लड़ने को खड़ी हो रही फौज

बिहार बहु–आपदा प्रवण राज्य है। भूकंप के सर्वाधिक खतरनाक जोन में राज्य के कई जिले आते हैं। बाढ़ भी प्रायः हर साल आती है। ठनका, शीतलहरी आदि का प्रकोप भी बिहार झेलता है। प्राकृतिक आपदाओं के अलावा मानवजनित आपदाओं का कहर भी टूटता है। हमारे गांव, पंचायत, प्रखंड या फिर जिलों में ऐसी ही विभिन्न तरह की आपदाएं आती रहती हैं। पंचायतों में कुछ नौजवान आपदा जोखिम न्यूनीकरण एवं प्रबंधन हेतु जरूरी ज्ञान और हुनर सीख लें, तो वे अपने जिले को आपदाओं से सुरक्षित रख सकते हैं। इस उद्देश्य हेतु प्रशिक्षण के माध्यम से बिहार राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण राज्य के नौजवानों/नवयुवतियों को प्रशिक्षित कर आपदाओ के प्रत्युत्तर हेतु तैयार कर रहा है।

इसी क्रम में फरवरी–2024 माह में दिनांक 31–01–2024 से 11–02–2024 तक सिविल डिफेंस ट्रेनिंग इंस्टीट्यूट, बिहटा, पटना में 12 दिवसीय आवासीय प्रशिक्षण कार्यक्रम में प्रशिक्षित किया गया। इसमें गोपालगंज एवं मधुबनी जिले के कुल 60 युवाओं ने भाग लिया। इसी माह सामुदायिक स्वयंसेवकों के प्रशिक्षण का दूसरा बैच भी यहीं दिनांक 14–02–2024 से 25–02–2024 तक आयोजित किया गया। इस बैच में मधेपुरा और सीवान जिले के कुल 72 स्वयंसेवकों को प्रशिक्षित किया गया। प्राधिकरण की ओर से राज्य भर में अब तक कुल 18 बैच में लगभग 11 हजार स्वयंसेवकों को प्रशिक्षित किया जा चुका है।

स्पोर्ट्स : बिहार में विकसित होगी खेल संस्कृति

बिहार में खेल संस्कृति विकसित करने के लिए राज्य सरकार कई स्तरों पर काम कर रही है। इसके लिए राज्य में खेल विश्वविद्यालय और खेल अकादमी स्थापित करने की प्रक्रिया चल रही है। वहीं इसी वर्ष जनवरी महीने में अलग से खेल विभाग का भी गठन कर दिया गया है। राजगीर में अंतरराष्ट्रीय स्तर का एक विशाल स्टेडियम बनाया जा रहा है। राज्य का पहला खेल विश्वविद्यालय और खेल अकादमी दोनों नालंदा जिले के राजगीर में स्थापित होने जा रहे हैं। ये दोनों संस्थान राजगीर में बन रहे अंतर्राष्ट्रीय क्रिकेट स्टेडियम परिसर में स्थापित किए जाएंगे। इस खेल विश्वविद्यालय के लिए 31 और खेल अकादमी के लिए 81 पदों की स्वीकृति भी मंत्रिमंडल की ओर से दे दी गई है।

गौरतलब है कि राज्य में खेल और खिलाड़ियों के विकास के लिए सरकार ने एक नए विभाग का गठन किया है। इस विभाग का नाम खेल विभाग होगा। नया विभाग कला संस्कृति एवं युवा एवं खेल विभाग से अलग कार्य करेगा। पूर्व में खेल विभाग कला संस्कृति एवं युवा एवं खेल विभाग के अंतर्गत आता था। मंत्रिमंडल सचिवालय ने इस संबंध में अधिसूचना जारी कर दी है। नवगठित खेल विभाग राज्य का 45वां विभाग होगा।

इससे पूर्व बिहार खेल विश्वविद्यालय विधेयक 2021 विधानमंडल से पास किया गया था। गुजरात, पंजाब, असम, तमिलनाडु और राजस्थान के बाद खेल विश्वविद्यालय स्थापित करने वाला बिहार छठा राज्य बन गया है। इस विश्वविद्यालय के कुलपति का चयन खेल प्रशासन और खेल प्रबंधन के अनुभव के साथ–साथ अंतर्राष्ट्रीय स्तर के खिलाड़ी में से किया जाएगा। वहीं इस विश्वविद्यालय के पदेन कुलाधिपति मुख्यमंत्री होंगे। नालंदा जिले में बन रहे इस खेल विश्वविद्यालय में खेल से संबंधित डिप्लोमा से लेकर पोस्ट ग्रेजुएट तक की पढ़ाई की योजना है। प्रारंभिक चरण में शारीरिक शिक्षा, स्पोर्ट्स फिजिक्स, खेल प्रशिक्षण, स्पोर्ट्स मीडिया, खेल प्रबंधन और खेल प्रशासन संबंधी विषयों की पढ़ाई होगी।

विदित है कि पर्यटक नगरी राजगीर से महज पाँच किलोमीटर की दूरी पर पिलखी पंचायत के थेरा गांव में ठेरा हिंदुपुर मौजा की 90 एकड़ जमीन में अंतर्राष्ट्रीय क्रिकेट स्टेडियम सह स्पोर्ट्स एकेडमी का निर्माण हो रहा है। इस अंतर्राष्ट्रीय स्टेडियम के बन जाने के बाद यहां राष्ट्रीय व अंतर्राष्ट्रीय स्तर के मैच भी खेले जाएंगे। करीब 740 करोड़ रुपए खर्च कर इस क्रिकेट स्टेडियम और खेल अकादमी का निर्माण किया जा रहा है। यहां एक अलग खेल पुस्तकालय भी होगा। इस स्टेडियम में इनडोर और आउटडोर खेल परिसर होंगे। अकादमी में खेल का मैदान, खेल उपकरण, पुस्तकालय के साथ अनुसंधान, फिटनेस और प्रेरणा केंद्र जैसी सुविधाएं होंगी।

(निर्माणाधीन राजगीर स्टेडियम की फाइल फोटो साभार : ड्रोनमैन)

फिल्म समीक्षा : लापता लेडीज

- रिलीज की तारीख : 1 मार्च, 2024
- निर्देशक : किरण राव
- निर्माता : आमिर खान, किरण राव, ज्योति देशपांडे
- संगीत निर्देशक : राम संपत
- छायाकार : विकास नौलखा
- लेखक :स्नेहा देसाई, बिप्लव गोस्वामी
- समय : 122 मिनट
- कलाकार : नितांशी गोयल, प्रतिभा रांटा, स्पर्श श्रीवास्तव, रवि किशन, छाया कदम

कहानी : कहानी शुरू होती है, एक गांव में हो रही शादी से। मूलतः सारी पटकथा घूमती है ट्रेन में बदल गयी फूल और पुष्पा के इर्द–गिर्द। निर्मल प्रदेश नामक काल्पनिक क्षेत्र में वर्ष 2001 में दीपक ससुराल से अपनी नवब्याहता फूल के साथ खचाखच भरी ट्रेन में सफर कर रहा है। चूंकि शादी का सीजन है इसीलिए ट्रेन में कई और नवविवाहित जोड़े भी बैठे हैं, जब दीपक उतरता है तो वह फूल को पहचान नहीं पाता और फूल की बजाय साथ बैठी दूसरी दुल्हन को अपने साथ ले जाता है। गांव में पहुंचने पर जब रीती रिवाज हो रहे होते हैं, तब जाकर यह पता चलता है कि यह फूल नहीं पुष्पा है, फिर सारी कहानी फूल को ढूंढ़ने के इर्द–गिर्द है।

नैरेटिव : लापता लेडीज का सारा परिवेश ग्रामीण है, गांवों में घटनेवाली सारी समस्याओं को केंद्र में रख इसे बनाया गया है। छोटे स्टेशनों पर ट्रेन के न रुकने की समस्या, जनरल कोच में भीड़ होना, घूंघट प्रथा, दहेज प्रथा, पारिवारिक उत्पीड़न, ग्रामीण साक्षरता, सामाजिक रूढ़ियां (पति का नाम न लेना), पारिवारिक जिम्मेदारी के कारण महिलाओं की प्रतिभा सामने न आ पाना, उच्च शिक्षा में महिलाओं की उपस्थिति, किसानों पर कर्ज की समस्या, जैविक खेती को प्रोत्साहन, सरकारी संस्थाओं में भ्रष्टाचार और अकर्मण्यता, राजनीति में व्यक्ति का उपयोग, अनाथों की समस्या, दिव्यांगों के नाम पर उगाही और महिलाओं के स्वावलंबन का मसला फिल्म के जरिये उठाया गया है।

तकरीबन, 13 साल बाद निर्देशन के क्षेत्र में लौटी किरण राव ने लापता लेडीज के माध्यम से बॉलीवुड में एक निर्देशक के नाते स्थापित होने की तरफ एक पुरजोर कदम बढ़ाया है। किरण राव ने इस कहानी में अपनी नजर को परे रखते हुए किरदारों को मुक्त किया है और इसी कारण पूरी कहानी के प्रवाह पर फूल और पुष्पा का प्रभाव दृष्टिगोचर है। इस कहानी के मुख्य पात्र वही दो दुल्हन है जो कि लापता हुई हैं, एक और जहां पुष्पा पढ़ी लिखी, संघर्षशील, तर्क

का आश्रय लेने वाली, पति का नाम लेने वाली है। वहीं फूल अनपढ़, पति का नाम हाथ की मेहंदी से बताने वाली, पति ने पुलिस के पास न जाने की बात को आज्ञा की तरह मानने वाली है। पुष्पा और फूल दोनों ही इस कहानी जान है हालांकि दीपक का पात्र प्रमुख रूप से सक्रिय है परन्तु प्रभावी नहीं है।

संवाद : यह किसी भी फिल्म के प्राण होते हैं। इस कहानी के संवादों के कारण ही पूरी फिल्म में कहीं भी बोरियत महसूस नहीं होती है, न ही कहानी धीमी होती है। संवाद एकदम छोटे, चुस्त और गतिशील हैं। लापता लेडीज प्राण इसके वन लाइनर्स हैं, जो कि कहानी को मजेदार बनाते हुए आगे बढ़ाते हैं। लापता लेडीज में इन दोनों मुख्य महिला पात्रों के अलावा कुछ किरदार है, जो आपके मन पर छाप छोड़ जायेंगे। श्याम मनोहर (रवि किशन) ने अभिनय में अपना लोहा मनवाया है। शुरू में एक भ्रष्ट और घूसखोर पुलिसवाले लगते हैं, जिनका ध्यान केस पर न होकर, पैसा कहां से मिलेगा, इस पर है। किंतु श्याम मनोहर दरियादिल व्यक्ति के रूप में सामने आते हैं और कब आपके दिल में घर कर जायेंगे आपको पता भी नहीं लगेगा।

विकास नौलखा ने सिनेमैटोग्राफी माध्यम से पूरी फिल्म को रोमांचित बनाया है, ग्रामीण परिवेश का एकदम स्पष्ट स्वरूप जो सामने आया है उसमे छायांकन ने अपना एक महत्वपूर्ण किरदार दिया है। रामसंपत के संगीत ने पूरी फिल्म में रोमांच और गति प्रदान की है, जब गाने आते है तो कहानी को आगे बढ़ाते है न कि कहानी को रोकते हैं। व्यवधान डालते हैं। स्वानंद किरकिरे, प्रशांत पांडेय और दयानिधि शर्मा के बोल, राम सम्पत का संगीत और श्रेया घोषाल, सोना महापात्रा, अरिजीत सिंह और सुखविंदर सिंह के स्वरों से सजे गानों ने फिल्म को मनोरंजक बनाया है।

अंत में : लापता लेडीज निश्चित तौर भारत के ग्रामीण परिवेश को व्यक्त करती है, हो सकता है जैसा आनंद गोदान की समाप्ति के बाद मिलता है वैसा इसकी समाप्ति के बाद भी मिले। फिल्म में एडिटिंग के स्तर पर थोड़ा काम और हो सकता था। फिल्म का पहला हिस्सा थोड़ा कमजोर–सा है हालांकि जैसे ही फिल्म का उद्देश्य समझ आता है, तब मनोरजन का स्तर बढ़ जाता है। कुल मिलाकर यही कि यह फिल्म देखी जानी चाहिए।

समीक्षक : राजदीप (शोधार्थी, हिंदी विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली।)

साभार : कैंपस क्रॉनिकल डॉट इन

मैं और मेरा कर्मस्थल

कुंदन कुमार कौशल (बिहार राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण)

कार्यालय का शाब्दिक अर्थ है – कार्य का आलय। वह आलय, जहाँ महत्वपूर्ण कार्यों का निष्पादन होता हो। आलय का अर्थ है घर। इस घर में हम अपनी छुट्टियों को छोड़कर किसी सामान्य दिन के 24 घंटों का एक तिहाई हिस्सा अर्थात् आठ घंटे व्यतीत करते हैं। इस दौरान हम न सिर्फ अपने दायित्वों एवं कार्यों का निष्पादन करते हैं बल्कि इस प्रक्रिया में अपनी मानसिक एवं बौद्धिक क्षमता का विकास भी करते हैं। इसमें कोई अतिशयोक्ति नहीं कि हम अपने घर को साफ–सुथरा, आरामदेह, सुकून भरा एवं सुविधाओं से युक्त पसंद करते हैं। एक अच्छा परिवेश हमारी कार्यकुशलता एवं कार्यक्षमता को बढ़ाने के साथ–साथ मानसिक एवं शारीरिक स्वास्थ्य को भी सबल बनाता है।

बिहार राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण का नया कार्यालय उक्त सभी आयामों से युक्त है। यह देश के सबसे सुरक्षित भवनों में से एक है, जिसमें सुरक्षा के साथ–साथ आधुनिक सुविधाओं का पूरा ध्यान रखा गया है। राजधानी के मुख्यमार्ग पर अवस्थित होने से आवागमन की सुगमता एवं चिड़ियाघर के पास होने से प्राकृतिक छटाओं का दृष्टिगोचर होना, इसे और भी सुकून भरा बनाता है। किसी कॉरपोरेट कार्यालय की तर्ज पर इसे बनाया गया है। यहां कर्मचारियों के कार्य से जुड़ी हर छोटी–छोटी बातों का ध्यान रखा गया है। हम अपने आप को भाग्यशाली मानते हैं कि इस परिवेश एवं ऐसे कार्यालय में काम करने का मौका मिला। यहां कार्य करना सही मायने में गौरव की बात है।

अंत में, मैं प्राधिकरण के नेतृत्व के प्रति उनकी दूरदर्शिता एवं कर्मियों के लिए आधुनिक एवं समकालिक आधार पर बने कार्यालय व बेहतर परिवेश के लिए हृदय से आभार प्रकट करता हूं।

अगलगी से बचाव हेतु सलाह (Advisory)

अग्नि सुरक्षा सप्ताह 14 - 20 अप्रैल, 2024

बिहार सरकार

राज्य के गाँवों एवं शहरों में अगलगी की घटनाएँ बढ़ने लगी हैं। जैसे-जैसे गर्मी बढ़ेगी और पछुआ हवा चलेगी, अगलगी के घटनाओं की संभावना बढ़ती जाएगी। आग से हमारे घर, खेत, खलिहान एवं जान-माल को भारी क्षति पहुँचती है तथा सब कुछ पूरी तरह से बर्बाद हो जाता है। हम सब इसे रोक सकते हैं अगर हम थोड़ी सी सावधानी बरतें।

अतएव अगलगी से बचाव हेतु जनसाधारण को निम्नानुसार सलाह दी जा रही है:-

अगलगी से बचाव हेतु उपाय :-

- दिन का खाना 9 बजे सुबह से पूर्व तथा रात का खाना शाम 6 बजे तक बना लें।
- कटनी के बाद खेत में छोड़े डंठलों में आग नहीं लगावें।
- हवन आदि का काम सुबह निपटा लें।
- आग बुझाने के लिए बालू अथवा मिट्टी बोरे में भरकर तथा दो बाल्टी पानी अवश्य रखें।
- दीपक (दीया), लालटेन, मोमबत्ती को ऐसी जगहों पर न रखें जहाँ से गिरकर आग लगने की संभावना हो।
- आग से हमारे खेत, खलिहान एवं जान-माल की रक्षा हेतु जलती हुई माचिस की तीली, अधजली बीड़ी एवं सिगरेट इधर-उधर ना फेंके।
- शार्ट सर्किट की आग से बचने के लिए बिजली वायरिंग की समय-समय पर मरम्मत करा लें।
- मवेशियों को आग से बचाने के लिए मवेशी घर के पास पर्याप्त मात्रा में पानी का इंतजाम रखें और निगरानी अवश्य करते रहें।
- भोजन बनाने का कार्य तेज हवा के समय नहीं किया जाये।
- खाना बनाते समय ढीले-ढाले और पॉलिस्टर के कपड़े पहनकर खाना ना बनायें, हमेशा सूती कपड़ा पहन कर ही खाना बनायें।
- सार्वजनिक स्थलों, ट्रेनों एवं बसों आदि में ज्वलनशील पदार्थ लेकर न चलें।
- आग लगने पर समुदाय के सहयोग से आग बुझाने का प्रयास करें।
- फायर ब्रिगेड (101, 112 नम्बर) एवं प्रशासन को तुरंत सूचित करें एवं उन्हें आग बुझाने में सहयोग करें।
- अगर कपड़ों में आग लगे तो उन्हें दिए गए चित्र के अनुसार बुझाने का प्रयास करें।

बिहार राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण

(आपदा प्रबंधन विभाग, बिहार सरकार)

डी-ब्लॉक, पांचवां तल, सरदार पटेल भवन, नेहरू पथ, पटना - 800023, फोन : (0612) 2547232
Visit us : www.bsdma.org; e-mail : info@bsdma.org राज्य आपातकालीन संचालन केंद्र (SEOC) - (0612) 2294204/205 टॉल फ्री नं0 : 1070, मो0 नं0 : 7070290170

आपात की स्थिति में संपर्क करें

बिहार अग्निशमन सेवा : 0612-2222020, मो. नं. : 7485805818, कंट्रोल रूम नं. : 0612-2222213, 0612-2222214, अग्निशमन हेल्प लाईन : 101, 112

बिहार राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण
(आपदा प्रबंधन विभाग, बिहार सरकार)